आयुष मंत्रालय
भारत सरकार

आयुष में परिवर्तनकारी प्रगति का एक दशक

सबके लिए समग्र स्वास्थ्य

2014-2024

विषय–सूची

विषय	पृष्ठ सं.
आयुष मंत्रालय का परिचय	**1**
▪ घटनाक्रम	2
▪ कार्यक्षेत्र	3
▪ आयुष नेटवर्क	4
▪ वैश्विक उपस्थिति	5
▪ बजट आवंटन	**6**
विभिन्न कार्यक्षेत्रों के तहत आयुष मंत्रालय की पहल और उपलब्धियाँ	**7**
अनुसंधान और विकास	**8**
▪ अनुसंधान पहल और उपलब्धियाँ	9
प्रौद्योगिकी	**23**
▪ आयुष ग्रिड	25
शिक्षा और नीति समर्थन	**27**
▪ नीतिगत पहल	27
▪ शैक्षणिक संस्थान	29
▪ शिक्षा क्षेत्र के तहत अन्य पहलें	38
जन स्वास्थ्य	**43**
▪ राष्ट्रीय आयुष मिशन	43
▪ आयुष्मान आरोग्य मंदिर (आयुष)	46

विषय–सूची

विषय	पृष्ठ सं.
▪ राष्ट्रीय स्वास्थ्य देखभाल कार्यक्रमों में एकीकृत दृष्टिकोण	48
▪ केंद्रीय आयुष संस्थानों के माध्यम से सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं की उपलब्धता	50
▪ आयुर्वेद कल्याण केंद्र	51
▪ आयुष स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं के लिए बीमा कवरेज	51
वैश्वीकरण	**52**
▪ अंतर्राष्ट्रीय सहयोग संवर्धन के लिए एक सेंट्रल सेक्टर स्कीम	52
▪ विश्व स्वास्थ्य संगठन के साथ सहयोग	52
▪ वैश्विक मान्यताः अंतर्राष्ट्रीय शिखर सम्मेलनों और मंचों में आयुष की प्रभावी भूमिका	56
▪ आयुष छात्रवृत्ति योजना	60
▪ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस	61
आयुष उद्योग	**64**
औद्योगिक विकास एवं सुगमता	65
▪ आयुष बाजार आकार में अप्रतिम वृद्धि	65
▪ आयुष उद्यमिता का संवर्धन	66
▪ आयुष निर्यात संवर्धन परिषद (आयुषएक्सिल)	70
▪ आयुष वीजा	71
▪ व्यापार करने को सुगम करना और अनुपालन प्रक्रियाओं का सरलीकरण	71

विषय–सूची

विषय	पृष्ठ सं.
गुणवत्ता नियंत्रण और मानकीकरण	**73**
▪ सीडीएससीओ में आयुष प्रकोष्ठ	73
▪ एओजीयूएसवाई योजना	73
▪ भेषज सतर्कता (फार्माकोविजिलेंस) पहलें	73
▪ बीआईएस में आयुष इकाई	74
▪ भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी भेषजसंहिता आयोग (पीसीआईएम एंड एच)	75
▪ अधिसूचित खाद्य सुरक्षा और मानक (आयुर्वेद आहार) विनियम, 2022	76
अन्य पहलें और उपलब्धियाँ	**77**
▪ सतत विकास लक्ष्यों की दिशा में प्रयास (एसडीजी)	77
▪ राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (एनएमपीबी)	80
▪ सूचना शिक्षा और संचार (आईईसी) गतिविधियाँ	87
संक्षिप्तियाँ	**91**

आयुष मंत्रालय का परिचय

एक दशक की अवधि में, आयुष मंत्रालय ने पारंपरिक भारतीय चिकित्सा के परिदृश्य को फिर से परिभाषित करते हुए आयुष के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है। 2014 में अपनी स्थापना के बाद से, आयुष मंत्रालय जहाँ एक ओर माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के दूरदर्शी नेतृत्व में विकास के मार्ग पर आगे बढ़ा है, वहीं दूसरी ओर यह समग्र स्वास्थ्य सेवा का प्रतीक भी बना है। पिछले दस वर्षों की यात्रा, आयुष पद्धतियों को स्वास्थ्य देखभाल की मुख्यधारा से जोड़ने, अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देने तथा भारतीय पारंपरिक चिकित्सा की गुणवत्ता और वैश्विक प्रासंगिकता सुनिश्चित करने के मंत्रालय के समर्पण की द्योतक है।

मंत्रालय द्वारा अपनाए गए रणनीतिक दृष्टिकोण में जन–स्वास्थ्य, अनुसंधान, प्रौद्योगिकी, शिक्षा, वैश्वीकरण और गुणवत्ता नियंत्रण जैसे व्यापक और महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान दिया गया है। इस व्यापक रणनीति का उद्देश्य सुरक्षित, उच्च गुणवत्ता वाले ऐसे आयुष उत्पादों और सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करना है, जो सार्वभौमिक स्वास्थ्य और सतत विकास के लक्ष्यों के अनुकूल हों। इस रणनीति से न केवल आयुष स्वास्थ्य देखभाल पद्धतियों के लाभों को बढ़ावा मिला है, बल्कि इसके फलस्वरूप जन सामान्य में जागरूकता और आयुष के प्रति रूचि में वृद्वि होने के साथ–साथ आयुष सेक्टर में मांग में बढ़ोत्तरी और ठोस प्रगति दर्ज की गई हैं।

घटनाक्रम:

आयुष मंत्रालय द्वारा की गई महत्वपूर्ण तरक्की और विकास का ही परिणाम रहा कि इसे 2014 में एक पूर्ण मंत्रालय का दर्जा दिया गया। यह निर्णायक क्षण, मंत्रालय के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ लेकर आया, जिसने समग्र स्वास्थ्य देखभाल पद्धतियों को बढ़ावा देने की सरकार की प्रतिबद्धता को उजागर करते हुए स्वास्थ्य देखभाल की भारतीय पारंपरिक पद्धतियों पर ध्यान केंद्रित किया।

1995

भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं होम्योपैथी विभाग (आईएसएम एंड एच)

2003

आयुर्वेद योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी (आयुष) विभाग नया नाम दिया गया

2011

सोवा रिग्पा को (आईएमसीसी अधिनियम 1970 के तहत मान्यता मिली)

2014

भारत सरकार के अधीन एक पूर्ण मंत्रालय का दर्जा प्रदान किया गया

कार्य क्षेत्रः

"आयुष मंत्रालय पारंपरिक भारतीय स्वास्थ्य देखभाल पद्धतियों को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से विविध कार्य क्षेत्रों में प्रसार करते हुए एक बहुआयामी तंत्र के भीतर रहकर काम करता है। स्वास्थ्य देखभाल वितरण से लेकर अनुसंधान, शिक्षा, प्रौद्योगिकी, औद्योगिक विकास और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग तक, प्रत्येक कार्य डोमेन में बढ़ावा देने और आयुष विधियों के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ऐसे अलग–अलग तरीकों का उपयोग कर मंत्रालय घरेलू और वैश्विक मंच पर पारंपरिक औषधीय पद्धतियों को एकीकृत करते हुए उपलब्धता और स्वीकृति को बढ़ावा देने का प्रयास करता है, जिससे कि लोगों के स्वास्थ्य और कल्याण को समृद्ध किया जा सके।"

आयुष नेटवर्क

मंत्रालय ने वैश्विक जुड़ाव को साधते हुए एक व्यापक राष्ट्रव्यापी नेटवर्क स्थापित किया है, जो वैश्विक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने की उसकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

पंजीकृत चिकित्सक	755780
कुल यूजी कॉलेज	886
कुल पीजी कॉलेज	251
डिग्री पाठ्यक्रमों में वार्षिक प्रवेश	59643
पीजी पाठ्यक्रमों में वार्षिक प्रवेश	7450
कुल आयुष अस्पताल	3844
कुल आयुष औषधालय	36848
सरकारी क्षेत्र में अस्पताल	3403
सरकारी क्षेत्र में औषधालय	27118
दवा विनिर्माण इकाइयाँ	8648

वैश्विक उपस्थिति

वैश्विक मंच पर आयुष को बढ़ावा देने की मंत्रालय की प्रतिबद्धता इस बात से देखी जा सकती है कि उसने कई द्विपक्षीय समझौते और सहयोगी अनुसंधान के प्रयास किए हैं जिनमें अलग–अलग देशों के साथ समझौता ज्ञापन, सहयोगी अनुसंधान समझौते और विश्व स्तर पर स्थापित आयुष सूचना प्रकोष्ठ स्थापित करना शामिल हैं। दुनिया भर के 50 से अधिक देशों में आयुर्वेद की उपस्थिति, भारतीय पारंपरिक चिकित्सा की वैश्विक स्वीकृति और मान्यता को रेखांकित करती है। इसके अलावा, आयुर्वेद को 30 से अधिक देशों में पारंपरिक चिकित्सा की एक पद्धति के रूप में स्वीकार किया जाता है जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसके व्यापक स्तर पर अपनाए जाने और इसकी विश्वसनीयता को दर्शाता है। 150 से अधिक देशों को निर्यात किए जा रहे आयुष उत्पादों के साथ, आयुष की वैश्विक उपस्थिति का विस्तार हो रहा है। यह वैश्विक स्वास्थ्य सेवा के परिदृश्य में आयुष के बढ़ते महत्व का द्योतक है।

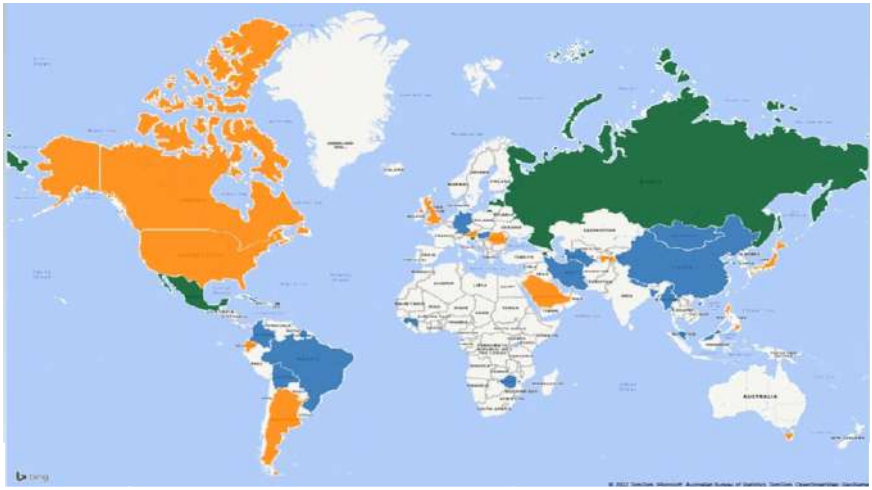

समझौता ज्ञापन	देश–देश के स्तर पर	संस्थान– संस्थान के स्तर पर (सहयोगी अनुसंधान)	अकादमिक पीठ स्तर पर	आयुष सूचना प्रकोष्ठ
संख्या	24	46	15	35 देशों में 39 सक्रिय

बजट आवंटन

वर्षों से, बजट आवंटन में लगातार वृद्धि हो रही है, जो इस क्षेत्र के महत्व की बढ़ती मान्यता और की जा रही पहलों और कार्यक्रमों को सशक्त करने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

बजट आवंटन (करोड़ रूपये में)

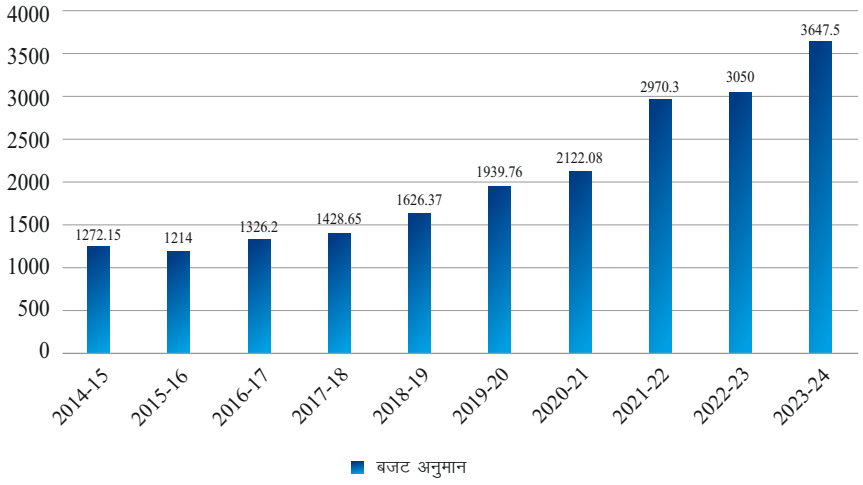

विभिन्न कार्य क्षेत्रों के तहत आयुष मंत्रालय की पहल और उपलब्धियाँ

1 अनुसंधान और विकास

माननीय प्रधानमंत्री ने हमेशा ही यह आह्वान किया है कि यदि हमें 21वीं सदी में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है तो हमें साक्ष्य–आधारित अनुसंधान और नवाचार के महत्व पर ध्यान देना होगा। पुराने और गैर–संचारी रोगों के लिए वैश्विक स्तर पर बढ़ते फोकस को ध्यान में रखते हुए, मंत्रालय एक समग्र और रोगी–केंद्रित स्वास्थ्य देखभाल दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के लिए प्रचलित आधुनिक चिकित्सा के साथ पारंपरिक पद्धतियों को जोड़ने पर जोर दे रहा है। **मंत्रालय ने बेहतर अनुसंधान पद्धतियों को विकसित करने के प्रयासों को बढ़ावा देने के लिए आयुष अनुसंधान और विकास के सामान्य दिशानिर्देश तैयार किए हैं।**

आयुष तथा आयुष पद्धतियों में अनुसंधान के लिए सामान्य दिशानिर्देश

- आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी दवाओं के लिए जीसीपी दिशानिर्देश
- निम्नलिखित पर ध्यान केंद्रित करते हुए आयुर्वेदिक फार्मूलेशन/उपचार हेतु तीन व्यापक दिशानिर्देश–
  - दवा विकास (मानकीकरण और गुणवत्ता सुनिश्चिति)
  - सुरक्षा/विषाक्तता
  - नैदानिक मूल्यांकन

(ccras.nic.in पर उपलब्ध)

अनुसंधान पहल और उपलब्धियाँः

1. **उत्कृष्टता केंद्रों की स्थापनाः** घरेलू और वैश्विक स्वास्थ्य देखभाल पद्धतियों में आयुष की बढ़ती स्वीकार्यता को ध्यान में रखते हुए, भारत सरकार ने शिक्षा, दवा विकास और अनुसंधान में शामिल प्रतिष्ठित आयुष संस्थानों की पहचान करने और उन्हें सहायता देने के प्रयास शुरू किए हैं ताकि उनके कार्यों और सुविधाओं को उत्कृष्टता के स्तर तक उन्नत किया जा सके।

- सीएसआईआर–इंस्टीट्यूट ऑफ जीनोमिक्स एंड इंटीग्रेटिव बायोलॉजी (आईजीआईबी) आयुर्जेनोमिक्सः आयुर्वेद में प्रयुक्त 'प्रकृति' का जीनोम सीक्वेंस के साथ संबंध किया गया है, जिससे यह व्यक्तिपरक निवारक और पूर्वानुमेय दवा का एक ऐतिहासिक अध्ययन बना है।

- सेंटर फॉर इंटीग्रेटिव मेडिसिन एंड रिसर्च (सीआईएमआर) – एम्स, आयुर्वेद और योग में अत्याधुनिक अनुसंधान गतिविधियों के साथ उल्लेखनीय अनुसंधान परिणाम जैसेः माइग्रेन और बार–बार होने वाले हृदय गति और रक्तचाप में अचानक होने वाली गिरावट (VASOVAGAL SYNCOPE) में एक सहायक चिकित्सा के रूप में योग।

- नई दिल्ली में यकृत और पित्त विज्ञान संस्थानः गट माइक्रोबायोटा पर विरेचन के प्रभाव पर अध्ययन।

- आयुर्टेक आईआईटी जोधपुरः आबादी और व्यक्तिगत जोखिम स्तरण और प्रारंभिक स्वास्थ्य उपचार हेतु एआई–संचालित एकीकृत ढाँचा स्थापित करना।

- निमहांस, बेंगलुरुः विभिन्न न्यूरोसाइकिएट्रिक विकारों के लिए योग और आयुर्वेद–आधारित एकीकृत उपचार।

- सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालयः वैक्सीन सहायक के रूप में अश्वगंधा पर पेटेंट।

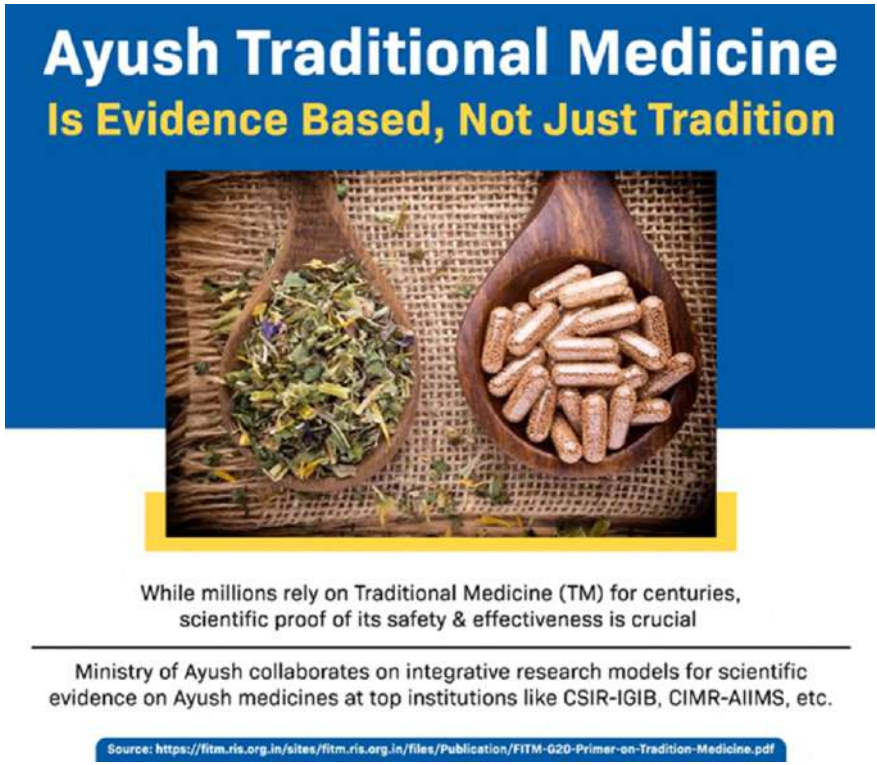

2. **योजनाएं**: आयुर्ज्ञान योजना में आयुष क्षेत्र में अनुसंधान क्षेत्रों को प्राथमिकता देने के लिए आयुर्वेद जीव विज्ञान एकीकृत स्वास्थ्य अनुसंधान घटक तथा अनुसंधान एवं नवाचार घटक है। आयुर्स्वास्थ्य योजना में एक जन–स्वास्थ्य घटक (पीएचआई) है जिसमें जन–स्वास्थ्य के क्षेत्र में अनुसंधान पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

3. **आईसीएमआर के साथ एकीकृत स्वास्थ्य अनुसंधान –** देश भर के सभी आयुर्विज्ञान संस्थानों (AIIMS) में आयुष–आईसीएमआर–उन्नत एकीकृत अनुसंधान केंद्र की स्थापना।

आयुष–आईसीएमआर – एकीकृत स्वास्थ्य अनुसंधान के लिए उन्नत केंद्र

एकीकृत स्वास्थ्य अनुसंधान के गतिशील और जीवंत पारिस्थितिकी तंत्र को विकसित करना

साक्ष्य आधारित एकीकृत निवारक और प्रबंधन दृष्टिकोण के माध्यम से "एक राष्ट्र एक स्वास्थ्य" के लक्ष्य को प्राप्त करना

राष्ट्रीय महत्व की बीमारियों के लिए एकीकृत स्वास्थ्य दृष्टिकोण को मुख्यधारा में लाना

- **प्राथमिकता वाले क्षेत्र**
- निवारक चिकित्सा / कल्याण
- मानसिक स्वास्थ्य, वृद्धावस्था स्वास्थ्य
- तंत्रिका तंत्र संबंधी विकार
- आरसीएच और पोषण
- जठरांत्रिय विकार
- एनसीडी और मेटाबोलिक विकार
- मस्कुलोस्केलेटल विकार
- संचारी रोग
- एनोरेक्टल रोग
- ऑटोइम्यून विकार

4. वैज्ञानिक शोधकर्ताओं को आयुष अनुसंधान का स्वामित्व लेने और मजबूत आईपीआर (IPR) तंत्र के माध्यम से पारंपरिक ज्ञान को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से आयुष मंत्रालय सक्रिय है। नेशनल आयुष रिसर्च कंसोर्टियम का लक्ष्य आयुष मंत्रालय डीएसआईआर, डीबीटी और डीएसटी के परस्पर सहयोग से वैश्विक मानकों पर खरे उतरने वाले उच्च गुणवत्ता अनुसंधान के संचालन के लिए एक संरचित व्यवस्था को स्थापित करना है। कंसोर्टियम का उद्देश्य सभी के लिए 'स्वास्थ्य' सुनिश्चित करने के व्यापक लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में अनुसंधान एवं विकास की रणनीति और योजना बनाना एवं क्रियान्वयन करना है।

इसके अतिरिक्त, पारंपरिक ज्ञान की रक्षा के महत्व को पहचानते हुए, मंत्रिमंडलीय सचिवालय ने भारतीय चिकित्सा की पारंपरिक प्रणालियों के लिए बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) संरक्षण को सक्षम करने के लिए एक समिति स्थापित की है।

5. **डीबीटी के साथ सहयोगः** साक्ष्य–आधारित जैव प्रौद्योगिकी उपचारों में विशेषज्ञता का लाभ उठाते हुए, इन प्रयासों का लक्ष्य जीवन की गुणवत्ता तथा जीवनकाल बढ़ाना और पुरानी बीमारियों जैसे मधुमेह, मोटापा, हृदय रोग, ऑस्टियोआर्थराइटिस, कैशेक्सिया, दर्द प्रबंधन तथा संक्रामक बीमारियों जैसे तपेदिक से जुड़ी रुग्णता को कम करना है। इसमें डेटा विश्लेषणात्मक उपकरणों के साथ–साथ रोग के पशु मॉडलों और अन्य उन्नत विश्लेषणात्मक तरीकों का उपयोग करके आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान के क्रियाविधिक अध्ययन पर जोर दिया जाता है। यह आयुष उपचारों की जैविक क्रियाविधि अंतर्दृष्टि विकसित करेगा, एकीकृत नई उपचार रणनीतियों के विकास को बढ़ावा देगा और एकीकृत चिकित्सा में उपचार के अधिक परिणाम सामने आएंगे।

6. योग और प्राकृतिक चिकित्सा के क्षेत्र में शिक्षा, निवारक स्वास्थ्य देखभाल और अनुसंधान में मानदंड स्थापित करने के उद्देश्य से झज्जर, हरियाणा और नागमंगल, कर्नाटक में **दो केंद्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान संस्थानों (सीआरआईवाईएन) की स्थापना की गई।** ये अत्याधुनिक संस्थान, योग और प्राकृतिक चिकित्सा को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देने और उसमें अनुसंधान करने के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय सहयोग केंद्र के रूप में कार्य करने के अलावा, साक्ष्य आधारित अनुसंधान के माध्यम से पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों और अभ्यासों के मौलिक पहलुओं और वैज्ञानिक सत्यापन पर ध्यान केंद्रित करते हैं। ये केंद्र योग और आरोग्यता के क्षेत्र में स्टार्टअप में इनक्यूबेशन केंद्रों के रूप में भी काम करेंगे।

7. **जन स्वास्थ्य अनुसंधान पहल**

अभिनव दृष्टिकोण और अंतःविषय सहयोग के माध्यम से विशिष्ट स्वास्थ्य चुनौतियों का समाधान करने के लिए सरकारी एजेंसियों, अनुसंधान संस्थानों और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के बीच कई जन–स्वास्थ्य अनुसंधान पहलें की जा रही हैं, जिनमें आईसीएमआर–एनआईआरटीएच (राष्ट्रीय जनजातीय स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान) के सहयोग से केंद्रीय जनजातीय कार्य मंत्रालय के तहत एकलव्य मॉडल रेजिडेंसियल

स्कूलों (ईएमआरएस) में जनजातीय अध्ययन शामिल है। इनमें आदिवासी समुदायों की अलग स्वास्थ्य जरूरतों को समझने और उन्हें पूरा करने का प्रयास किया जाता है। इसके अलावा 'मिशन उत्कर्ष' पहल के माध्यम से सहायक आयुर्वेद उपचारों से किशोर लड़कियों, गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं में एनीमिया को नियंत्रित करना है। मिशन उत्कर्ष का उद्देश्य मौजूदा स्वास्थ्य देखभाल रणनीतियों में आयुर्वेदिक दृष्टिकोण को शामिल करके पोषण की स्थिति और कमजोर समूहों के समग्र स्वास्थ्य परिणामों में सुधार करना है। इसके अलावा, मंत्रालय जन–स्वास्थ्य अनुसंधान में कुपोषण को लक्ष्य बनाकर, पोषण 2.0 के लिए महिला एवं बाल विकास मंत्रालय (डब्ल्यूसीडी) के साथ सहयोग कर रहा है।

पिछले पांच वर्षों में, केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस) ने अनुसंधान–उन्मुख जन–स्वास्थ्य गतिविधियों में महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं:

जनजातीय उपयोजना (टीएसपी) के अंतर्गत जनजातीय स्वास्थ्य देखभाल अनुसंधान कार्यक्रम

- विभिन्न राज्यों में सीसीआरएएस और सीसीआरयूएम संस्थानों के माध्यम से कियान्वित
- लोगों तक पहुँच जनसंख्याः 544865 जनजातीय जनसंख्या
- आकस्मिक चिकित्सा सहायताः 256784 आदिवासी रोगी
- 878 लोक दावों/एलएचटी का दस्तावेजीकरण किया गया

अनुसूचित जाति उपयोजना (एससीएसपी) के तहत मोबाइल स्वास्थ्य देखभाल अनुसंधान कार्यक्रम

- राज्यों में सीसीआरएएस और सीसीआरयूएम संस्थानों के माध्यम से कियान्वित
- सर्वे की गई जनसंख्याः 831349
- चिकित्सा सहायता प्रदान की गईः 482944 रोगी

अनुसूचित जाति उपयोजना (एससीएसपी) के तहत महिला एवं बाल स्वास्थ्य देखभाल (डब्ल्यूसीएच) कार्यक्रम

- 10 राज्यों में 10 सीसीआरएएस संस्थानों के माध्यम से कियान्वित किया गया।
- सर्वे की गई जनसंख्याः 323700
- चिकित्सा सहायता प्रदान की गईः 195104 रोगी

स्वास्थ्य रक्षण कार्यक्रम

- 19 राज्यों में 21 सीसीआरएएस संस्थानों के माध्यम से कियान्वित की गई।
- चिकित्सा सहायता प्रदान की गईः 149940 रोगी

3 जिलों सुरेन्द्र नगर (गुजरात), भीलवाड़ा (राजस्थान) और गया (बिहार) में एनपीसीडीसीएस के साथ आयुष (आयुर्वेद) का एकीकरण

- 11182 रोगियों का नामांकन हुआ

पूर्वोत्तर योजना के तहत आयुर्वेदिक स्वास्थ्य केंद्र

- 4 राज्यों में 19 केंद्र
- लाभार्थियों की कुल संख्याः 514395

8. कोविड–19 का सामना

कोविड मानवता के लिए एक कठिन समय साबित हुआ है। इससे भारत को भी बहुत खोना पड़ा है, लेकिन यह कोविड का दौर ही था जब दुनिया को कोविड से लड़ने में भारतीय पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के प्रभाव का एहसास हुआ और आयुष आधारित प्रभावी उपचार प्रोटोकॉल और निवारक उपायों के साथ इसका मुकाबला किया गया।

मंत्रालय ने कोविड–19 के प्रबंधन के लिए आयुर्वेद और योग पर आधारित राष्ट्रीय नैदानिक प्रबंधन पैनल जारी किया।

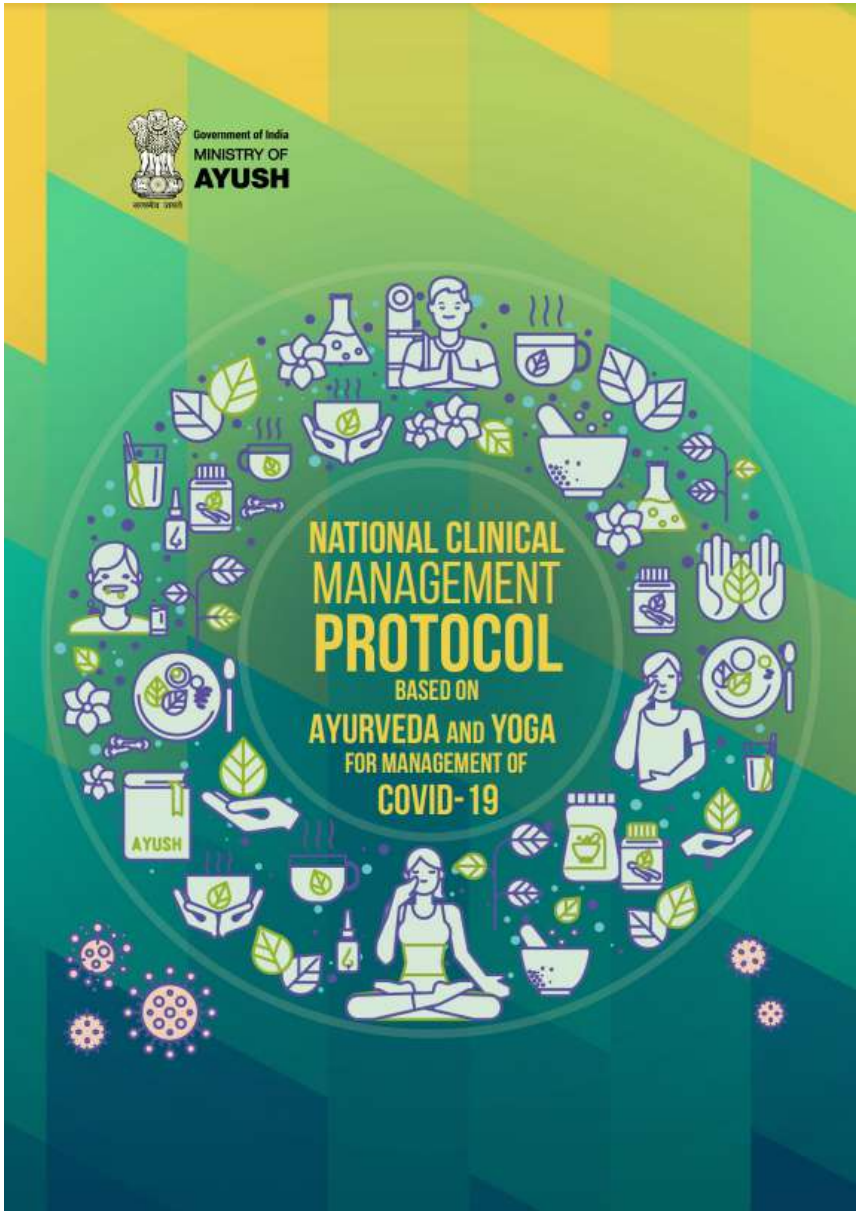
Government of India
MINISTRY OF
AYUSH
NATIONAL CLINICAL
MANAGEMENT
PROTOCOL
BASED ON
AYURVEDA AND YOGA
FOR MANAGEMENT OF
COVID-19
AYUSH

कोविड–19 से संबंधित आयुष दिशानिर्देश

कोविड–19 के लिए विकसित किए गए आयुष उत्पाद

Ministry of Ayush recommends Ayuraksha Kit (based on research evidences) for prophylactic care against COVID 19

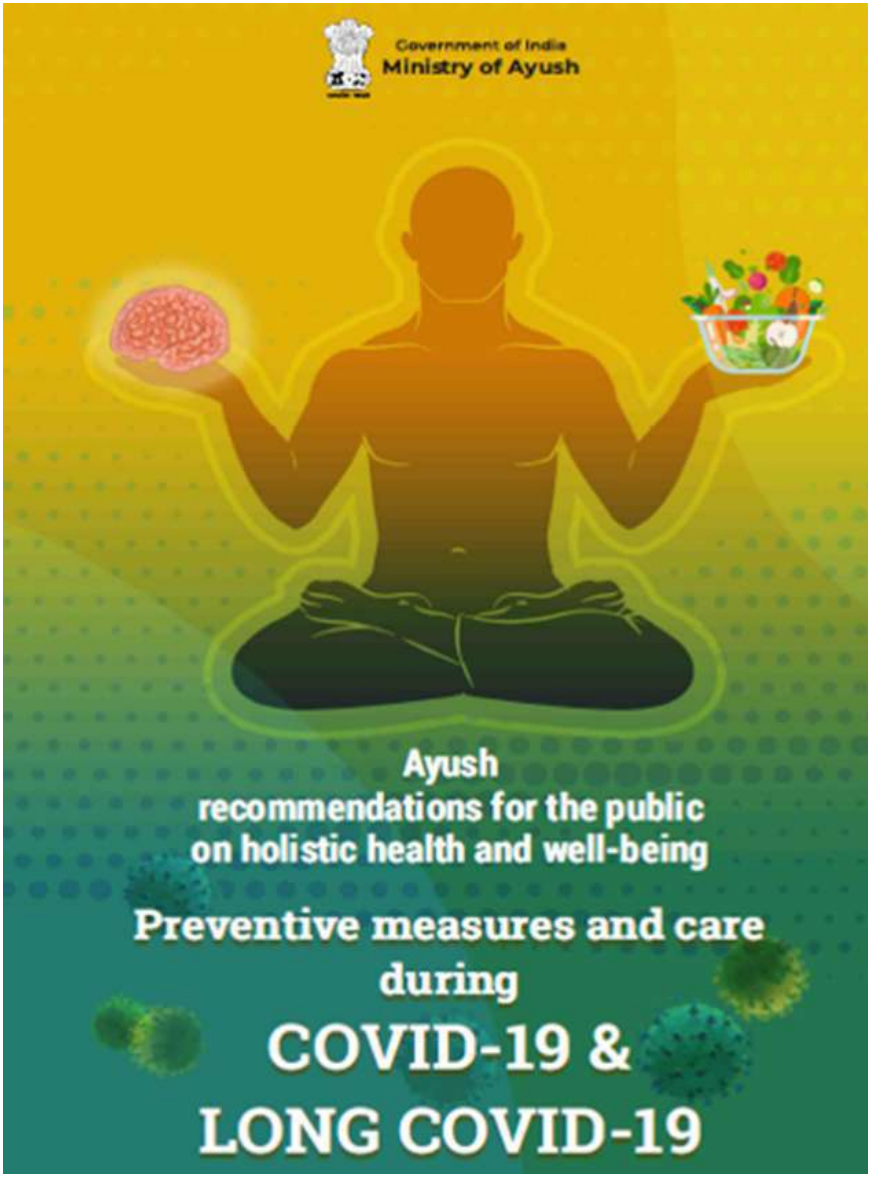
Government of India
Ministry of Ayush
Ayush
recommendations for the public
on holistic health and well-being
Preventive measures and care
during
COVID-19 &
LONG COVID-19

कोविड–19 पर आयुष अनुसंधान

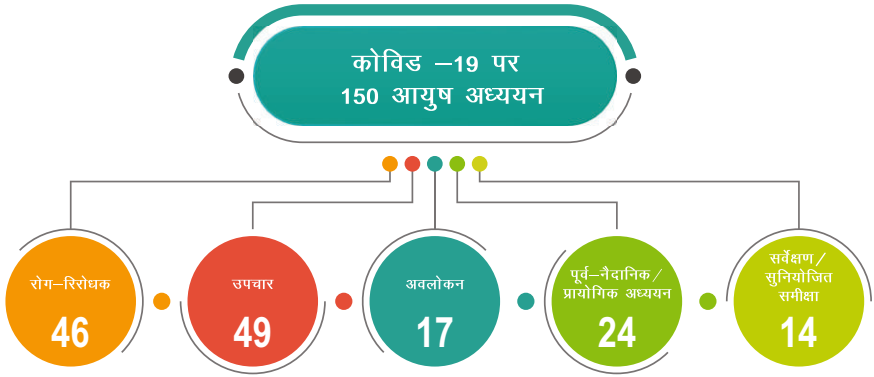

अध्ययन स्थल – लगभग 160 (पूर्व–नैदानिक अध्ययन केंद्रों सहित)

- 118 अध्ययन पूर्ण किए गए।

आयुष कोविड–19 अनुसंधान एवं विकास पहलों पर राष्ट्रीय कोष, अब तक 612 लेख, नैदानिक अनुसंधान–150, पूर्व–नैदानिक 35, औषध अनुसंधान–124, मौलिक अनुसंधान–303 प्रकाशित किए गए।

महामारी के दौरान 150 से अधिक शोध अध्ययन किए गए, केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस) की पेटेंट की गई दवा, आयुष–64 और कबासुरा कुडिनेर (सिद्ध चिकित्सा) को देश में वितरित किया गया और जनता द्वारा इसे भलीभांति स्वीकार किया गया।

- **आयुष संजीवनी मोबाइल ऐप अध्ययन** महामारी के दौरान किया गया था, जिसमें 1.35 करोड़ उत्तरदाताओं और 7.24 लाख सार्वजनिक डेटा के विश्लेषण से पता चला कि 85.1% उत्तरदाताओं ने कोविड–19 की रोकथाम के लिए आयुष उपायों का उपयोग किया, जिनमें से 89.8% उत्तरदाताओं ने सहमति व्यक्त की उन्हें आयुष एडवाइजरी के अभ्यास लाभ हुआ, यह Pub-Med indexed JMIRx Med. 2021 जर्नल में प्रकाशित हुआ है।

- अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए) द्वारा एक जन–स्वास्थ्य अध्ययन **आयुरक्षा "कोरोना से जंग– दिल्ली पुलिस के संग"** बड़े पैमाने पर किया गया था। संस्थान ने दिल्ली पुलिस के 80,000 कर्मियों को आयुरक्षा किट के माध्यम से आयुर्वेद देखभाल प्रदान की जो 'फ्रंटियर्स इन पब्लिक हेल्थ' जर्नल में प्रकाशित हुआ है।

- **कोविड–19 के प्रबंधन के लिए आयुष 64 का सफलतापूर्वक पुनर्प्रयोजन किया गया:** सीएसआईआर, डीबीटी, आईसीएमआर और प्रतिष्ठित चिकित्सा संस्थानों के सहयोग से कुल 10 पूर्व नैदानिक और नैदानिक अध्ययन किए गए। आयुष–64 ने अपने उल्लेखनीय एंटीवायरल, प्रतिरक्षा–मॉड्यूलेटर और एंटीपाइरेटिक गुणों को सिद्ध किया और इसके विभिन्न पहलुओं को Pub Med-indexed journals में प्रकाशित किया गया है।

- आयुष मंत्रालय के तहत राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (एनएमपीबी) और जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) के सम्मिलित प्रयासों के माध्यम से **भारत ने कोविड–19 पर अनुसंधान में महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है।** इस सहयोग के परिणामस्वरूप ओरल उपचार का उपयोग करके देश का पहला in-vivo anti-SARS-COV-2 वायरस अध्ययन हुआ। आयुष नेटवर्क अनुसंधान परियोजनाओं के माध्यम से SARS-COV-2 और उससे जुड़े रोगों को कम करने के लिए चुनिंदा आयुष हर्बल अर्कों का पूर्व नैदानिक (प्री–क्लीनिकल) मूल्यांकन किया गया। 'ट्रांसलेशनल हेल्थ साइंस एंड टेक्नोलॉजी इंस्टीट्यूट' में किए गए इन अध्ययनों का उद्देश्य विभिन्न हर्बल उपचारों की एंटी–वायरल प्रतिक्रिया और प्रतिरक्षा–मॉड्यूलेटरी क्षमता का आकलन करना है। विशेष रूप से, अणु तैल से SARS-COV-2 संक्रमण का मुकाबला करने के आशाजनक परिणाम सामने आए, जो वायरस से प्रभावित 'गोल्डन सीरियाई हैम्स्टर्स' के फेफड़ों में वायरल लोड कम करने से सिद्ध हुआ है।

9. नैदानिक अनुसंधान में पहल

नैदानिक अनुसंधान में हाल ही में की गई पहलें

- अश्वगंधा वैक्सीन अध्ययन (सात अध्ययन स्थलों पर)
- रूमेटॉइड अर्थराइटिस पर बहुकेंद्रित अध्ययन (एएमआरए अध्ययन)
- एडीएचडी में आयुर्वेद उपचार – निमहांस
- गट माइक्रोबायोम और विरेचन – आईएलबीएस
- हेपेटोप्रोटेक्शन के लिए एटीटी में आयुष–पीटीके एड–ऑन – जेएनएमसी, बेलगावी
- सिकल–सेल रोग – एम्स भोपाल और डीएमआईएमएस, वर्धा
- कोरोनरी आर्टरी रोग – सफदरजंग अस्पताल और माधवबाग
- पोस्ट–सीएबीजी रिहेब्लिटेशन, एम्स दिल्ली
- वृद्धावस्था स्वास्थ्य देखभाल पर सामुदायिक अध्ययन, एम्स नई दिल्ली (बल्लभगढ़ केंद्र)
- बच्चों में कुपोषण स्वर्णप्राशन– एसजीआईएमएस, लखनऊ

इसके अलावा, सीसीआरएएस ने 36 रोग स्थितियों में 170 आयुर्वेद औषध फार्म्युलेशन को मान्यता दी है

10. दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए) में 2023 में **उन्नत अनुसंधान हेतु मॉलीक्यूलर बायोलॉजी लैब**, पाण्डुलिपि इकाई और 'दक्ष्य उत्कृष्टता केंद्र' का शुभारंभ किया गया।

इंटीग्रेटेड ट्रांसलेशनल आणविक जीव विज्ञान यूनिट का उद्घाटन केंद्रीय बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग और आयुष मंत्रालय के मंत्री श्री सर्बानंद सोणोवाल ने किया।

इंटीग्रेटेड ट्रांसलेशनल आणविक जीव विज्ञान यूनिट

11 आयुष अनुसंधान पोर्टलः

आयुष पद्धतियों के साक्ष्य आधारित अनुसंधान आँकड़ों को प्रसारित करने के लिए अब तक 42105 शोध प्रकाशन उपलब्ध हैं।

2 प्रौद्योगिकी

▪ आयुष ग्रिडः आयुष क्षेत्र की आई.टी. रीढ़

आयुष मंत्रालय ने स्वास्थ्य सेवा में प्रौद्योगिकी एकीकरण के प्रति अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हुए डिजिटल क्षेत्र में एक क्रांतिकारी यात्रा शुरू की है। 22 प्रमुख डिजिटल पहलों के साथ एक मजबूत डिजिटल स्वास्थ्य प्रणाली 'आयुष ग्रिड' की शुरुआत अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने के मंत्रालय के संकल्प का उदाहरण है।

आयुष टेलीमेडिसिन सेवाएँ 'ई–संजीवनी' पोर्टल के माध्यम से आसानी से सुलभ हो गई हैं, जो स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं और रोगियों के बीच एक सहज संबंध बनाती हैं। इस पहल ने न केवल उपलब्धता को बढ़ाया है, बल्कि पारंपरिक चिकित्सा के क्षेत्र में आगे की तकनीकी प्रगति का मार्ग भी प्रशस्त किया है।

नए उभरते आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के क्षेत्र में, आयुष मंत्रालय के नेतृत्व में भारत पारंपरिक चिकित्सा में एआई के टॉकिंग ग्रुप का नेतृत्व कर रहा है। यह पारंपरिक चिकित्सा की बेहतरी के लिए एआई का उपयोग करने में भारत को अग्रणी भूमिका में स्थापित करता है।

प्रमुख डिजिटल पहलें

एएचएमआईएस

एम–योग

वाई–ब्रेक

नमस्ते योग ऐप

ई–चरक
ई–औषधि

ई–संजीवनी
मोबाइल ऐप

आयुष
नेक्स्ट

14443 पर
आयुष कोविड
टेली परामर्श

आयुष ग्रिडः आयुष क्षेत्र की आई.टी. रीढ़

आयुष ग्रिड

प्रभावी और उन्नत स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए डिजिटल पहल

'Y-Break'
योग प्रोटोकॉल ऐप

- पाँच मिनट का योग अभ्यास जिसमें आसन, प्राणायाम एवं ध्यान शामिल हैं
- कार्यस्थल पर काम करते हुए स्वयं को तनाव–मुक्त, तरोताजा करने और काम पर फिर से फोकस करने में मदद करता है
- विभिन्न योग–अभ्यासों के बारे में जागरूक करेगा
- जनसामान्य को अपनी सुविधा से कभी भी योग–अभ्यास करने में मदद करेगा

आयुष ग्रिड ने योग के लिए वाई–ब्रेक ऐप भी विकसित किया है।

ई–एलएमएस एवं व्यापक एएचएमआईएस पोर्टलों का शुभारंभः 18 और 19 मई 2023 को आयोजित राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम) सम्मेलन के दौरान, आयुष मंत्रालय की दो आईसीटी पहलें अर्थात ई–लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (ई–एलएमएस) और उन्नत इलेक्ट्रॉनिक स्वास्थ्य रिकॉर्ड प्रणाली के रूप में एक व्यापक आयुष अस्पताल प्रबंधन सूचना प्रणाली (एएचएमआईएस) शुरू की गई थी।

3 शिक्षा और नीति समर्थन

आयुष शिक्षा का पुनर्गठन

मंत्रालय ने बड़े पैमाने पर आयुष शिक्षा क्षेत्र के पुनर्गठन की सुविधा प्रदान की है। आयुष शिक्षा में एक उल्लेखनीय परिवर्तन आया है जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के अनुरूप है। इन सुधारों का उद्देश्य ऐसी चिकित्सा शिक्षा प्रणाली स्थापित करना है जो गुणवत्तापूर्ण और किफायती शिक्षा की उपलब्धता को सुनिश्चित करती है, उच्च गुणवत्ता वाले कुशल आयुष पेशेवरों की उपलब्धता सुनिश्चित करती है, और अधिक समावेशी और एकीकृत दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के लिए समान और सार्वभौमिक स्वास्थ्य देखभाल को बढ़ावा देती है।

1. नीतिगत पहलें

सितंबर 2020 में भारतीय चिकित्सा पद्धति के लिए राष्ट्रीय आयोग (एनसीआईएसएम) अधिनियम, 2020 और राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग (एनसीएच) अधिनियम, 2020 अधिनियमित किया गया था। इन अधिनियमों ने क्रमशः पुराने भारतीय चिकित्सा केंद्रीय परिषद अधिनियम, 1970 और केंद्रीय होम्योपैथी परिषद अधिनियम, 1973 का स्थान लिया।

आयुष शिक्षा को एनईपी, 2020 के अनुकूल बनाते हुए ये आयोग आयुष शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व और आयामों की पारदर्शिता, दक्षता और छात्र केंद्रित शिक्षा व्यवस्था का निर्माण कर रहें हैं। इस प्रकार आयुष शिक्षा के विनियमन और मानकीकरण को यह आयोग बहुत मजबूती से सुनिश्चित कर रहे हैं।

केंद्रीय आयुष प्रवेश परामर्श समिति (एएसीसी)–यूजी/पीजी परामर्श

केंद्रीय आयुष प्रवेश परामर्श समिति की बेबसाइट–यूजी/पीजी परामर्श

केंद्रीय आयुष प्रवेश परामर्श समिति (एएसीसीसी) की प्रमुख विशेषताएँ

2. शैक्षणिक संस्थान

- पिछले एक दशक में गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा शिक्षा प्रदान करने वाले आयुष कॉलेजों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है।

वर्ष 2013–14 और 2023–24 के दौरान आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी और होम्योपैथी (एएसयू एवं एच) के स्नातक और परास्नातक कॉलेजों की संख्या के आँकड़ों की तुलना

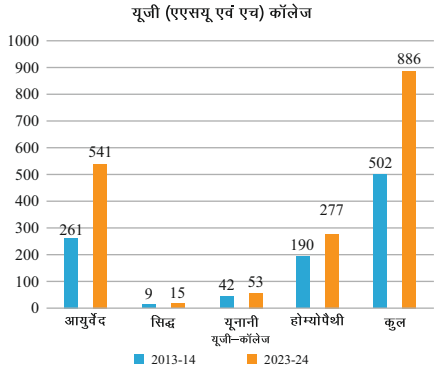

वर्ष 2013–14 और 2023–24 के दौरान एएसयू एंड एच स्नातक कॉलेजों की संख्या के आँकड़ों की तुलना।

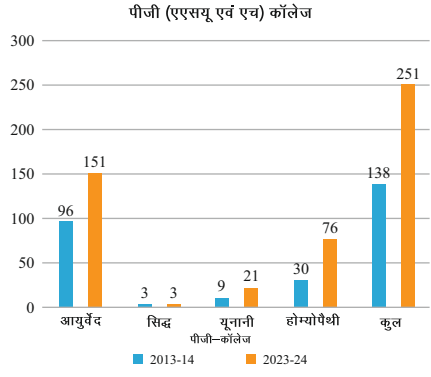

वर्ष 2013–14 और 2023–24 के दौरान एएसयू एंड एच परास्नातक कॉलेजों की संख्या के आँकड़ों की तुलना।

वर्ष 2013–14 और 2023–24 के दौरान आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी और होम्योपैथी के स्नातक और परास्नातक सीटों की संख्या के आँकड़ों की तुलना

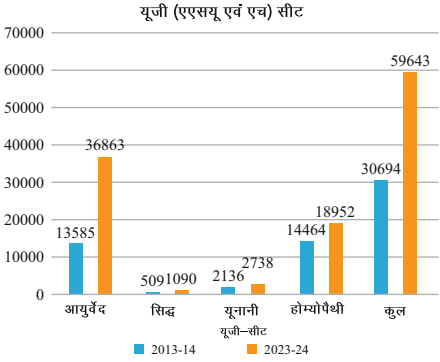

वर्ष 2013–14 और 2023–24 के दौरान एएसयू एंड एच स्नातक सीटों की संख्या के आँकड़ों की तुलना

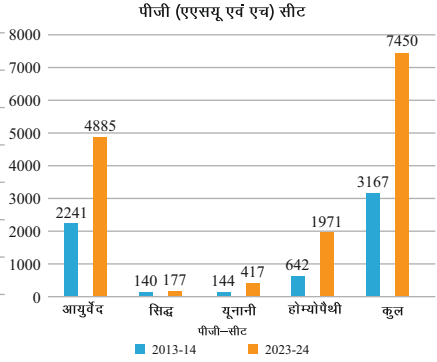

वर्ष 2013–14 और 2023–24 के दौरान एएसयू एंड एच परास्नातक सीटों की संख्या के आँकड़ों की तुलना

- **आयुष क्षेत्र में पहला राष्ट्रीय महत्व का संस्थान (आईएनआई)**

जामनगर, गुजरात में आयुर्वेद शिक्षण और अनुसंधान संस्थान (आईटीआरए) को राष्ट्रीय महत्व के संस्थान (आईएनआई) का दर्जा दिया गया है।

जामनगर, गुजरात में आयुर्वेद शिक्षण और अनुसंधान संस्थान (आईटीआरए)।

- **राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान (एनआईए), जयपुर को डी–नोवो श्रेणी के तहत मानद विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया**

जयपुर, राजस्थान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान को मानद विश्वविद्यालय (डी नोवो) के रूप में मान्यता दी गई है। ये दोनों संस्थान न केवल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर रहे हैं बल्कि आयुर्वेद के क्षेत्र में अनुसंधान के प्रमुख संस्थानों के रूप में प्रगति कर रहे हैं।

पीएचडी डुअल डिग्री कार्यक्रम

कांट्यूटेल पीएचडी प्रोग्राम

एनआईए ने डुअल पीएचडी डिग्री कार्यक्रम के लिए AcSIR के साथ एक समझौता किया है। यह एकीकृत कार्यक्रम है और शोधछात्र को दो गाइड (प्रत्येक संगठन से एक) के तहत दो पीएचडी डिग्री प्राप्त होगी।

गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड

एनआईए, जयपुर में सर्वाधिक लोगों द्वारा नस्य पंचकर्म उपचार प्राप्त करने का गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड

सिमुलेशन प्रयोगशालाः कुशलता देने वाली शिक्षा

अनुभवपरक शिक्षा के लिए वर्चुअल एनोटॉमी डिसेक्शन टेबल

- **अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान**

दिल्ली में 2017 में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) की तर्ज पर दिल्ली में प्रथम अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए) की स्थापना की गई थी। राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद द्वारा अपने पहले मूल्यांकन चक्र में उच्चतम A++ ग्रेड प्राप्त करने वाला यह पहला आयुष शिक्षण संस्थान है।

अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए) की वेबसाइट

- राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर और अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान, दिल्ली के अलावा 9 और राष्ट्रीय संस्थान आयुष मंत्रालय के तहत स्वायत्त संगठनों के रूप में काम कर रहे हैं। ये हैं:–

1. पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं लोक चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (एनईआईएएफएमआर), पासीघाट, अरुणाचल प्रदेश
2. पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं होम्योपैथी संस्थान (एनईआईएएच), शिलांग, मेघालय
3. राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ (आरएवी), नई दिल्ली
4. मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान, नई दिल्ली
5. राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान (एनआईएन), पुणे, महाराष्ट्र
6. राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान (एनआईयूएम), बेंगलुरु, कर्नाटक
7. राष्ट्रीय सिद्ध संस्थान (एनआईएस), चेन्नई, तमिलनाडु
8. राष्ट्रीय सोवा रिग्पा संस्थान (एनआईएसआर), लेह, लद्दाख और
9. राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान (एनआईएच), कोलकाता, पश्चिम बंगाल

- राष्ट्रीय आयुष संस्थानों के तीन अत्याधुनिक अनुषंगी केंद्र

1. अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान, गोवा

2. राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान, गाजियाबाद

3. राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान, नरेला

मंत्रालय द्वारा किए गए निरंतर प्रयासों तथा भारत सरकार द्वारा दिए गए सहयोग के परिणामस्वरूप इन राष्ट्रीय संस्थानों की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई है।

- सोवा–रिग्पा में अनुसंधान, शिक्षा और सार्वजनिक स्वास्थ्य के प्रावधान के तहत 20 नवंबर 2019 को मंत्रिमंडल की मंजूरी के साथ लद्दाख संघ राज्य क्षेत्र के लेह में स्थित राष्ट्रीय सोवा–रिग्पा अनुसंधान संस्थान को ष्राष्ट्रीय सोवा रिग्पा संस्थानष् के रूप में उच्चीकृत किया गया।

- पासीघाट, अरुणाचल प्रदेश में स्थित पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं लोक चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (एनईआईएएफएमआर) के रूप में पूर्वोत्तर लोक चिकित्सा संस्थान (एनईआईएफएम) के नामकरण और अधिदेश में परिवर्तन के लिए मंत्रिमंडल का अनुमोदन।

3. शिक्षा क्षेत्र के तहत अन्य पहलें:

1. **एम्स में आयुष का अलग शैक्षणिक विभाग:** माननीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री की अध्यक्षता में 29.07.2023 को आयोजित एम्स के केंद्रीय संस्थान निकाय (सीआईबी) की 7 वीं बैठक में एम्स में आयुष के अलग से शैक्षणिक विभाग स्थापित करने का निर्णय लिया गया। इस पहल का उद्देश्य आधुनिक और पारंपरिक चिकित्सा की शिक्षा को एकीकृत करना, दोनों प्रणालियों के बीच परस्पर सहयोग और तालमेल को बढ़ावा देना है।

2. आयुष में शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार का समर्थन करने के लिए आयुर्ज्ञान योजना

3. प्रमाणन और प्रत्यायन (मान्यता प्रदान करना)

प्रमाणन और प्रत्यायन (ऐक्रेडिटेशन)

राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ, नई दिल्ली के तहत
आयुर्वेद प्रशिक्षण प्रत्यायन बोर्ड (एटीएबी)

योग प्रमाणन बोर्ड (वाईसीबी) (2018)
10 विभिन्न स्तर के योग पाठ्यक्रमों के माध्यम से 5.6 लाख से अधिक योग पेशेवरों का प्रमाणन

4.क्षमता निर्माण पहलः

कार्यक्रम	पात्र उम्मीदवार/संस्थानों का नाम	सीटों की संख्या
स्पार्क	आयुर्वेद स्नातक छात्र	200
पीजी–स्टार	आयुर्वेद स्नातकोत्तर छात्र	100
पीडीएफ	एमडी (आयु)/पीएचडी (जीवन विज्ञान)	10
पीएचडी फैलोशिप	अनुसंधान/शैक्षणिक संस्थान	अभी तक 27 डिग्री प्रदान की गई
पंचकर्म तकनीशियन कोर्स	एनएआरआईपी चेरुथुरुति, सीएआरआई दिल्ली, सीएआरआई गुवाहाटी, आरएआरआई जम्मू	प्रति वर्ष 65
पंचकर्म में सर्टिफिकेट कोर्स	एनएआरआईपी चेरुथुरुति	60 प्रति वर्ष (2 बैच में)
मर्म चिकित्सा में सर्टिफिकेट कोर्स	एनएआरआईपी चेरुथुरुति	40 प्रति वर्ष (2 बैच में)

5. **आरआईएस में डॉक्टोरल और पोस्ट–डॉक्टोरल अनुसंधान के लिए एफआईटीएम–आयुष फैलोशिपः** आयुष मंत्रालय के सहयोग से विकासशील देशों के लिए अनुसंधान और सूचना प्रणाली (आरआईएस) में स्थापित भारतीय पारंपरिक चिकित्सा मंच (एफआईटीएम) भारतीय पारंपरिक दवाओं (आईटीएम) पर व्यावहारिक नीति बनाने में योगदान देता है। अनुसंधान फैलोशिप योजना के तहत, एफआईटीएम का

लक्ष्य आईटीएम स्वास्थ्य पद्धतियों से संबंधित आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक–आर्थिक, व्यापार, प्रबंधन और प्रौद्योगिकी में अनुसंधान को प्रोत्साहित करना और बढ़ावा देना है।

6. कौशल विकास कार्यक्रम

स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र कौशल परिषद (एचएसएससी)

आयुष मंत्रालय और कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय (एमएसडीई) के निर्देशों के तहत स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र कौशल परिषद (एचएसएससी) के कार्यक्षेत्र में 2018 में आयुष से संबंधित उप–परिषद का गठन किया गया।

एचएसएससी–एआईआईए उत्कृष्टता केंद्र (CoE), नई दिल्ली का शुभारंभ

माननीय श्री श्रीपाद नायक केंद्रीय राज्य मंत्री, आयुष, स्वतंत्र प्रभार ने आयुष क्षेत्र में कौशल विकास के पहले उत्कृष्टता केंद्र का शुभारंभ किया। वैद्य राजेश कोटेचा, सचिव, आयुष मंत्रालय, डॉ. तनुजा नेसारी, निदेशक, एआईआईए सहित आयुष मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

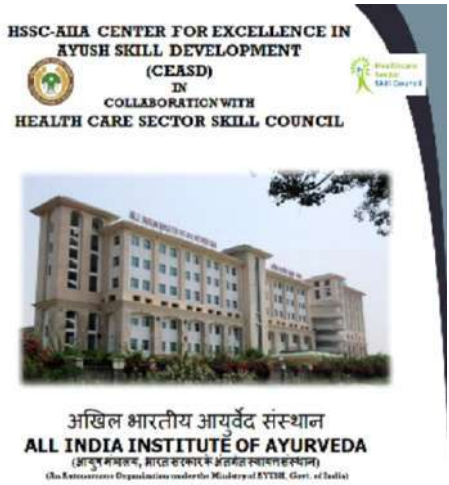

आयुष कौशल योग्यता का शुभारंभ

श्री सर्बानंद सोणोवाल, आयुष एवं पोत, पत्तन और जल परिवहन मंत्री ने 29 अक्टूबर, 2021 को आयोजित आयुर–उद्यमः के अवसर पर आयुष योग्यता का शुभारंभ किया। आयुष और महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री डॉ. मुंजपरा महेंद्रभाई भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

राज्य	प्रशिक्षणरत अभ्यर्थी
बिहार	1550
छत्तीसगढ़	210
हरियाणा	510
जम्मू और कश्मीर	2250
मध्य प्रदेश	1879
पंजाब	3350
उत्तर प्रदेश	240
उत्तराखंड	300
कुल	**10289**

कौशल विकास कार्यक्रम के अंतर्गत संचालित पाठ्यक्रम	
पाठ्यक्रम	**प्रशिक्षित**
• पंचकर्म तकनीशियन पाठ्यक्रम	**46**
• आयुर्वेद डायटीशियन	**07**
• आपात प्रबंधन पाठ्यक्रम	**22**
• 'वेलनेस के लिए योग' पर आधार पाठ्यक्रम	**44**
• क्षारसूत्र तकनीशियन	**03**
• गुडुची की पहचान और उसके प्रसार के लिए संवेदीकरण तथा गुडुची सत्व तैयार करने के लिए कौशल विकास का कार्यक्रम	**50**
कुल	**172**

आयुष उप क्षेत्र कौशल परिषद के तहत प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले उम्मीदवारों की संख्या को दर्शाने वाले राज्यवार आंकड़े

4 जन स्वास्थ्य

भारतीय स्वास्थ्य सेवा व्यवस्था के भीतर आयुष के एकीकरण ने व्यापक सार्वजनिक लाभ के लिए पारंपरिक चिकित्सा को प्राथमिकता देते हुए एक परिवर्तनकारी बदलाव को उत्प्रेरित किया है। राष्ट्रीय आयुष मिशन, आयुष्मान आरोग्य मंदिर (आयुष) और प्रसिद्ध स्वास्थ्य संस्थानों में आयुष के सफल एकीकरण जैसी पहलें सार्वभौमिक पहुँच के साथ–साथ किफायती पारंपरिक स्वास्थ्य देखभाल की प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं इससे लाभार्थियों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और आयुष तृतीयक स्वास्थ्य सेवाओं, प्रमुख संस्थानों और यहां तक कि रक्षा सेवाओं में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। डीजीएचएस के तहत एक समर्पित आयुष वर्टिकल की स्थापना इसके महत्व को और अधिक पुष्ट करती है। पोषण अभियान में आयुष का सक्रिय योगदान, अंतर्वर्ती रोगियों में वृद्धि, आयुष अस्पतालों के लिए एनएबीएच प्रत्यायन और सोवा–रिग्पा उपचार के प्रावधान इसके समग्र प्रभाव को दर्शाते हैं। व्यापक पहुँच के लिए एम्स में चल रहा एकीकरण भारत में एक अधिक समावेशी और व्यापक स्वास्थ्य सेवा प्रणाली को आकार देने में आयुष की परिवर्तनकारी भूमिका को प्रकट करता है।

- **राष्ट्रीय आयुष मिशनः** राज्यों में पहुँच और उपलब्धता में वृद्धि के माध्यम से आयुष सेवाओं को मजबूत करने के लिए, केंद्र द्वारा प्रायोजित योजना, स्वास्थ्य देखभाल के रोग–रोकथाम परक और प्रोत्साहन पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम), को सितंबर 2014 को शुरू किया गया था।

योजना के मुख्य घटकः

- आयुष सेवाएँ
- आयुष शैक्षणिक संस्थानों का सहयोग
- दवाओं की गुणवत्ता का नियंत्रण

राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम) के तहत नई पहलें

राष्ट्रीय आयुष मिशन के लिए बजट आवंटन

एनएएम के लिए वर्ष वार बजट आवंटन

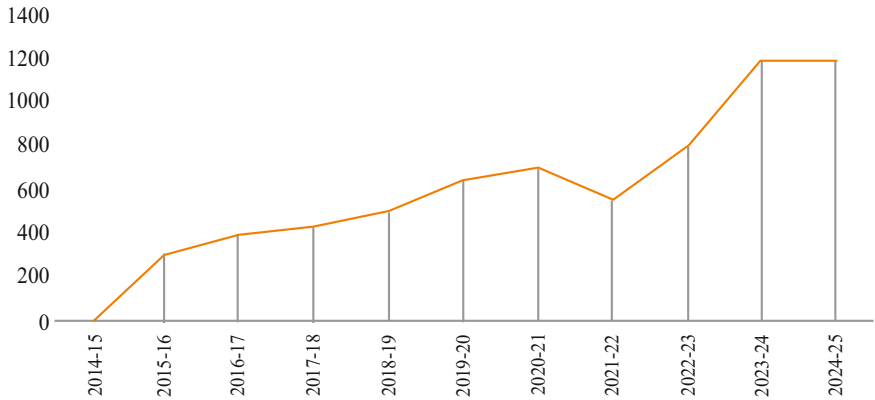

आयुष स्वास्थ्य सेवाओं के भारतीय जन स्वास्थ्य मानक का शुभारंभ

आयुष स्वास्थ्य सेवाओं के भारतीय जन स्वास्थ्य मानकों को नई दिल्ली के डा. अम्बेडकर इंटरनेशनल सेंटर में 4 मार्च 2024 को जारी किया गया। यह आयुष अधोसंरचना, मानव संसाधन एवं दवाओं में एकरूप गुणवत्ता को सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इन मानकों को नीति आयोग और डीजीएचएस (डॉरेक्टरेट जनरल ऑफ हेल्थ सर्विसेस) के सहयोग से जारी किया गया।

इन मानकों का लक्ष्य जनमानस के लिए स्वास्थ्य देखभाल में गुणवत्ता और बेहतर पहुंच को सुनिश्चित कर, पूरे देश में विभिन्न सुविधाओं के लिए मानदंड स्थापित करते हुए, आयुष स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं की वृद्धि करना है।

आयुष्मान आरोग्य मंदिर (आयुष): केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 20 मार्च 2020 को आयुष्मान भारत के तहत 12,500 आयुष्मान आरोग्य मंदिर (आयुष) को संचालित करने के आयुष मंत्रालय के प्रस्ताव को मंजूरी दी। इसका उद्देश्य लोगों पर बीमारी के बोझ को कम करने, उपचार पर स्वयं के खर्च को कम करने और जरूरतमंद लोगों को पुष्ट जानकारी के आधार पर विकल्प चुनने के लिए सूचित विकल्प प्रदान करने हेतु एक समग्रतापूर्ण वेलनेस मॉडल स्थापित करना है।

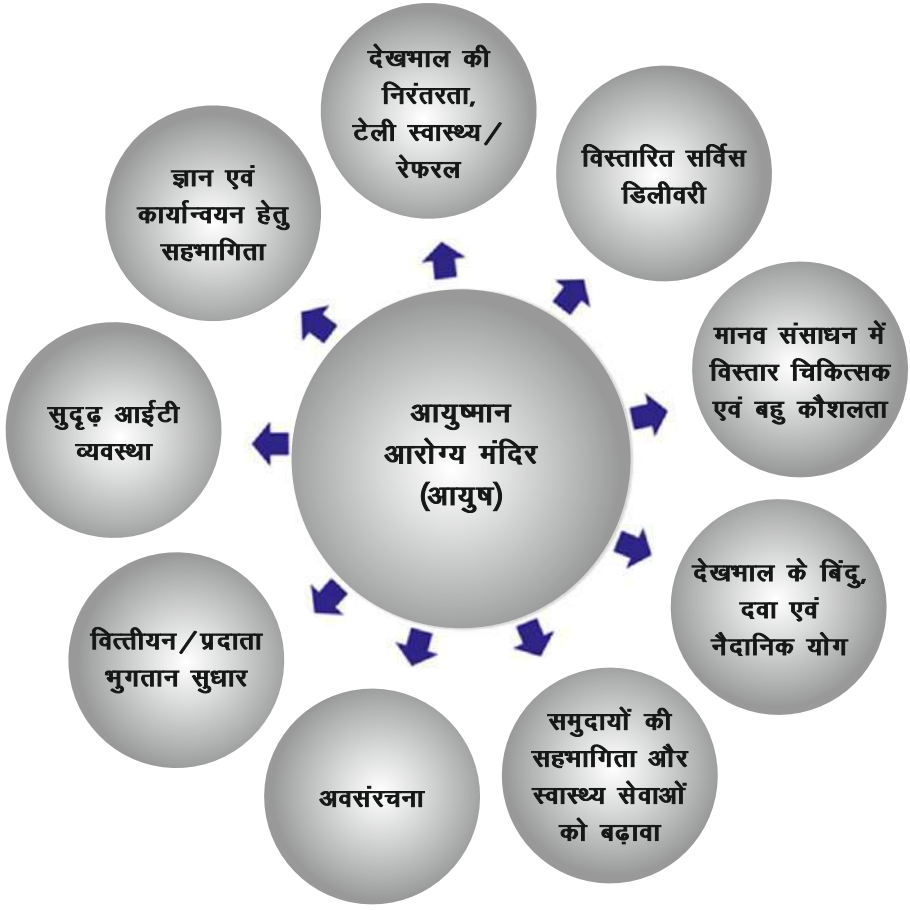

आयुष मंत्रालय के आयुष्मान आरोग्य मंदिरों की प्रमुख विशेषताएँ

आयुष्मान आरोग्य मंदिर (आयुष) के तहत लाभार्थियों की संख्या 2021 के 1.5 करोड़ से तेजी से बढ़कर 2022 में 8.4 करोड़ और 2023 में 8.9 करोड़ हो गई

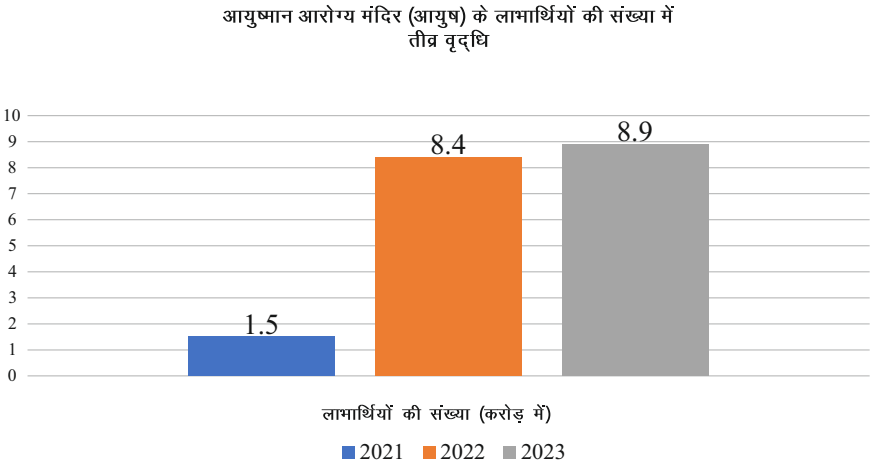

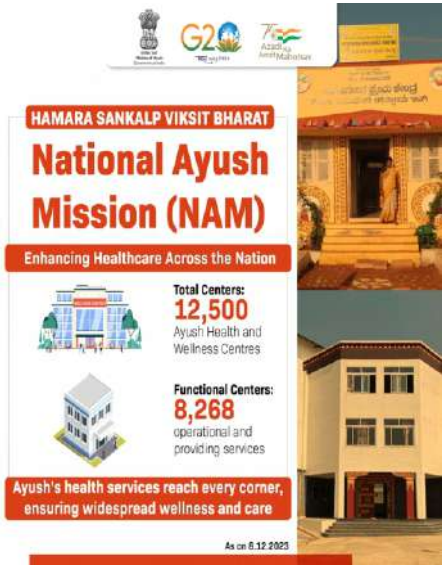

- सरकारी अस्पतालों और औषधालयों में आयुष लाभार्थियों की संख्या 2.5 करोड़ (वित्त वर्ष 2017–18) से बढ़कर 5.4 करोड़ (वित्त वर्ष 2021–22) हो गई।

सरकारी अस्पतालों तथा औषधालयों में आयुष लाभार्थियों की संख्या

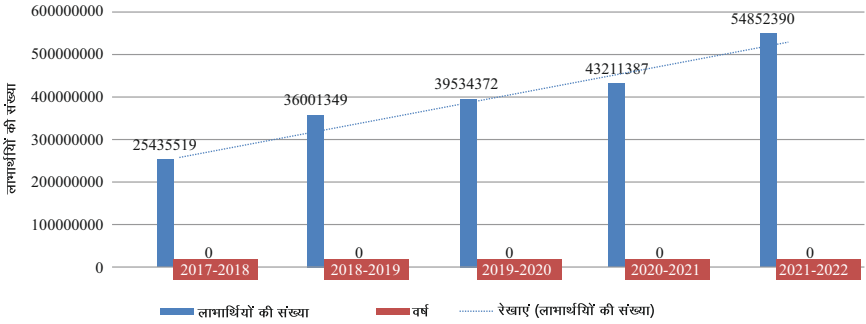

- **राष्ट्रीय स्वास्थ्य देखभाल कार्यक्रमों में एकीकृत दृष्टिकोण:**

पोषण–2.0 अभियान में आयुष की भूमिका

- पोषण वाटिकाओं का निर्माण
- स्थानीय पोषक आहारों को प्रोत्साहन
- रक्ताल्पता (अनीमिया) के उपचार के लिए आयुष समाधानों का प्रयोग एवं आयुर्वेदिक फार्मूलेशन से पाचन में सुधार
- स्थानीय स्तर पर उपलब्ध मौसमी आयुष भोजन को प्रोत्साहन–उनके स्वास्थ्य बढ़ाने वाले गुणों और उनकी स्थानीय स्तर पर सांस्कृतिक स्वीकार्यता को ध्यान में रखते हुए

आयुष मंत्रालय आयुष–आधारित आहार और जीवन शैली को बढ़ावा दे रहा है और "सुपोषित भारत" के अंतिम लक्ष्य को साकार करने के लिए महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के साथ मिलकर काम कर रहा है। आयुष मंत्रालय ने बच्चों, गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं में आयुष विधियों और सिद्धांतों के साथ पोषण परिणामों में सुधार के लिए "कुपोषण मुक्त भारत के लिए आयुष आहार परामर्श" के रूप में एक समग्र पोषण दिशानिर्देश जारी किया है।

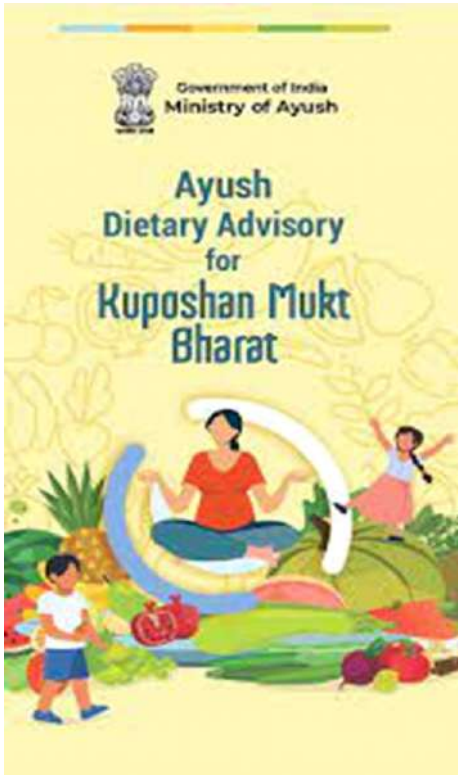

एनपीसीडीसी में आयुष का एकीकरणः एक पायलट अध्ययन के माध्यम से सामान्य गैर–संचारी रोगों को रोकने और प्रबंधित करने के लिए एनपीसीडीसी सेवाओं के साथ छह जिलों में आयुष सुविधाओं और पद्धतियों को प्रभावी ढंग से एकीकृत और लागू किया गया है। एकल आयुर्वेद चिकित्सा और पूरक चिकित्सा के रूप में प्राप्त अतिरिक्त लाभों से आशानुरूप परिणाम देखे गए हैं। इस कार्यात्मक एकीकरण में गैर–संचारी रोगों (एनएएम–एनपीसीडीसी) के प्रबंधन के लिए एकीकृत स्वास्थ्य सेवा प्रदान करना शामिल है। वर्तमान में, इस पहल को छह राज्यों तक बढ़ाया जा रहा है। इस मध्यावधि पहल को बाद में समूचे देश में लागू करने की योजना है।

केंद्रीय आयुष संस्थानों के माध्यम से सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं की उपलब्धता :

1. अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए) एकीकृत स्वास्थ्य सेवा का एक बेजोड़ उदाहरण है। वर्ष 2020–21 में, एआईआईए ने 11,841 रोगियों की सेवा की और यह संख्या 2021–22 में बढ़कर 29,986 हो गई। 2017–18 से 2022–23 तक, अंतर्वर्ती रोगियों की भर्ती में 7 गुना वृद्धि देखी गई। 44 विशेष ओपीडी कार्यशील हैं और अस्पतालों ने फरवरी 2024 तक लगभग 24,00,000 व्यक्तियों को सेवा प्रदान की है।

एकीकृत आयुष क्लीनिक

एकीकृत क्लीनिकल सेवा इकाई

एकीकृत कर्करोग (ऑन्कोलॉजी) केंद्र

एकीकृत दंतरोग केंद्र

गंभीर रोगों की देखभाल एवं आकस्मिक चिकित्सा का एकीकृत केंद्र

पथ्य एवं पोषण का एकीकृत केंद्र

2. रोगी देखभाल में आईटीआरए, जामनगर द्वारा एकीकृत दृष्टिकोण, अपनाया गया जिसके परिणामस्वरूप पिछले 3 वर्षों में 6.8 लाख ओपीडी और 9278 आईपीडी हुई है।

3. राष्ट्रीय सिद्ध संस्थान, प्रतिदिन लगभग 2000 रोगियों का इलाज करता है और प्रतिष्ठित एनएबीएच मान्यता प्राप्त कर चुका है जिसे देश में सबसे प्रमुख सिद्ध अस्पताल के रूप में चिह्नित किया गया है।

लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी और एकता नगर, केवड़िया में आयुर्वेद कल्याण केंद्र स्थापित किए गए हैं।

मसूरी, दिल्ली और केवड़िया में प्रसार गतिविधियाँ

लाल बहादुर शास्त्री अकादमी, मसूरी, उत्तराखंड (अगस्त 2020 से 31 जनवरी 2024 तक)	
ओ.पी.डी. रोगियों की संख्या	11,247
पंचकर्म रोगियों की संख्या	4,566
की गईं पंचकर्म विधियों की संख्या	7,770

वीएमसीसी एवं सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली (8 जुलाई 2022 से 31 जनवरी 2024 तक)	
ओ.पी.डी. रोगियों की संख्या	20,263
पंचकर्म रोगियों की संख्या	6,016
की गईं पंचकर्म विधियों की संख्या	16,184

आयुर्वेद कल्याण केंद्र, केवड़िया, गुजरात (अक्टूबर 2023 से 31 जनवरी 2024 तक)	
ओ.पी.डी. रोगियों की संख्या	292
पंचकर्म रोगियों की संख्या	128
की गईं पंचकर्म विधियों की संख्या	226

आयुष स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं के लिए बीमा कवरेज– आईआरडीएआई विनियमों के तहत, लगभग 27 बीमा कंपनियाँ 2016 से आयुष उपचार की एक या अधिक पद्धतियों को कवर करने वाले 140 से अधिक पॉलिसियों को बढ़ावा दे रही हैं। ''आयुष्मान भारत–पीएमजेएवाई'' में 172 आयुष पैकेजों को शामिल करने की प्रक्रिया चल रही है।

स्वास्थ्य बीमा कवरेज में मानकीकरण के संशोधित दिशानिर्देश

निम्न के लिए मानदंड अनिवार्यतः होने चाहिए	आयुष अस्पताल	आयुष डे–केयर
कम से कम 5 अंतरंग रोगियों के लिए बैड	✓	
चौबीसों घंटे के लिए प्रशिक्षित आयुष चिकित्सकों की व्यवस्था	✓	✓
आयुष थेरेपी प्रकोष्ठ/सुविधा संपन्न आपरेशन थियेटर	✓	✓
रोगियों के प्रतिदिन के रिकॉर्ड का लेखाजोखा रखना	✓	✓
स्वास्थ्य बीमा कंपनी के प्राधिकृत प्रतिनिधि तक पहुँच की व्यवस्था	✓	✓

5 वैश्वीकरण

आयुष मंत्रालय द्वारा पारंपरिक चिकित्सा में भारत को एक वैश्विक अगुवा के रूप में स्थापित करने के लिए सक्रिय पहल की गई है। साथ ही, इन पद्धतियों के स्वास्थ्य लाभ और सुरक्षा संबंधी प्रमाण उत्पन्न कर आयुर्वेद, योग और अन्य भारतीय पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों की माँग को दुनिया भर में बहुत बढ़ा दिया गया है।

- मंत्रालय ने **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग संवर्धन के लिए एक सेंट्रल सेक्टर स्कीम** विकसित की है। इसका उद्देश्य है– आयुष चिकित्सा पद्धतियों के प्रति जागरूकता सुदृढ़ करना; अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयुष पद्धतियों के प्रसार, विकास और उनकी मान्यता के लिए काम करना; हितधारकों के बीच संवाद–सहकार बढ़ाने में मदद करना तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयुष के लिए बाजार विकसित करना; अंतर्राष्ट्रीय स्तर सूचना तथा विशेषज्ञों के आदान–प्रदान में मदद करना; आयुष उत्पादों को अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बढ़ावा देना; तथा विदेशों में आयुष अकादमिक पीठ की स्थापना के लिए काम करना।

- **विश्व स्वास्थ्य संगठन के साथ सहयोग**

  1. आईटीआरए, जामनगर और एमडीएनआईवाई, नई दिल्ली में पारंपरिक दवाओं के लिए डब्ल्यूएचओ के सहयोगी केंद्र

  2. डब्ल्यूएचओ मुख्यालय जिनेवा में पी–5 स्तर पर सेकेंडमेंट आधार पर एक आयुष विशेषज्ञ और डब्ल्यूएचओ के दक्षिण–पूर्व एशियाई क्षेत्रीय कार्यालय में पी –4 में तकनीकी अधिकारी की प्रतिनियुक्ति।

  3. भारत को पारंपरिक चिकित्सा में अग्रणी के रूप में स्थापित करने के लिए जिनेवा में 'पारंपरिक चिकित्सा के मित्र' (फ्रेंड्स ऑफ टी.एम.) नाम से एक अनौपचारिक समूह का गठन।

  4. आयुष मंत्रालय ने 2016 के बाद से स्वास्थ्य देखभाल की वैज्ञानिक पारंपरिक पद्धतियों को बढ़ावा देने और इसकी गुणवत्ता और सुरक्षा को बढ़ाने और इस क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता के रूप में डब्ल्यूएचओ के साथ 3 परियोजना सहयोग समझौतों (पीसीए) पर हस्ताक्षर किए हैं।

5. WHO-mYOGA ऐप विकसित किया गया

6. विश्व स्वास्थ्य संगठन ने आयुर्वेद, योग और यूनानी चिकित्सा पद्धति में प्रशिक्षण और उपचार के लिए मानदंड प्रकाशित किए हैं।

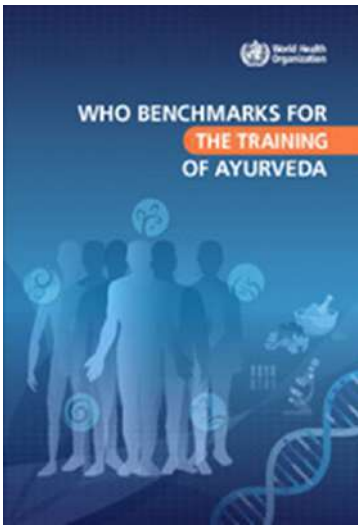

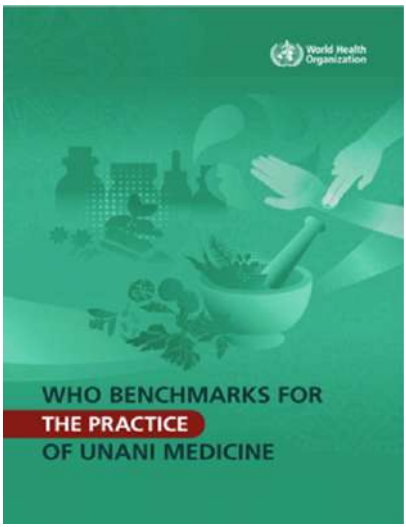

7. आईसीडी–11 मॉड्यूल 2 का शुभारंभ

हाल ही में 10 जनवरी, 2024 को दिल्ली में डब्ल्यूएचओ द्वारा जारी किए गए आईसीडी–11 मॉड्यूल 2 के साथ ही अब आयुर्वेद, सिद्ध और यूनानी के रुग्णता कोड बीमारियों के अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण में शामिल हो गए। इससे विश्व चिकित्सक समुदाय और स्वास्थ्य शोधकर्ताओं के साथ स्वयं के तकनीकी शब्दों में संचार की सुविधा प्राप्त हो गई है। इससे दुनिया भर की बीमा कंपनियों को अपने पॉलिसी पैकेजों में आयुष पद्धतियों को शामिल करने में भी काफी मदद मिलेगी।

"अब मैं आपसे भारत की एक ऐसी उपलब्धि साझा कर रहा हूँ जिससे मरीजों का जीवन आसान बनेगा, उनकी परेशानी कुछ कम होगी। मुझे ये बताते हुए खुशी हो रही है कि आयुष मंत्रालय ने आयुर्वेद, सिद्ध और यूनानी चिकित्सा से जुड़े डेटा और शब्दावली का वर्गीकरण किया है, इसमें, विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी मदद की है। दोनों के प्रयासों से आयुर्वेद, यूनानी और सिद्ध चिकित्सा में बीमारी और इलाज से जुड़ी शब्दावली की कोडिंग कर दी गयी है।"

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
("मन की बात" के 109वें एपिसोड में आईसीडी–11, टीएम मॉड्यूल 2 लॉंच के बारे में)

8. डब्ल्यूएचओ– वैश्विक पारंपरिक चिकित्सा केंद्र (डब्ल्यूएचओ जीटीएमसी)

आयुष मंत्रालय और विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भारत के जामनगर में विश्व का पहला और एकमात्र वैश्विक पारंपरिक चिकित्सा केंद्र (डब्ल्यूएचओ जीटीएमसी) स्थापित किया है।

(प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी, मॉरीशस के प्रधानमंत्री श्री प्रविंद जुगनाथ और डीजी, डब्ल्यूएचओ डॉ. टेड्रास अधोनम घेब्रेयेसस 19 अप्रैल, 2022 को जामनगर, गुजरात में डब्ल्यूएचओ जीटीएमसी के शिलान्यास समारोह के दौरान)

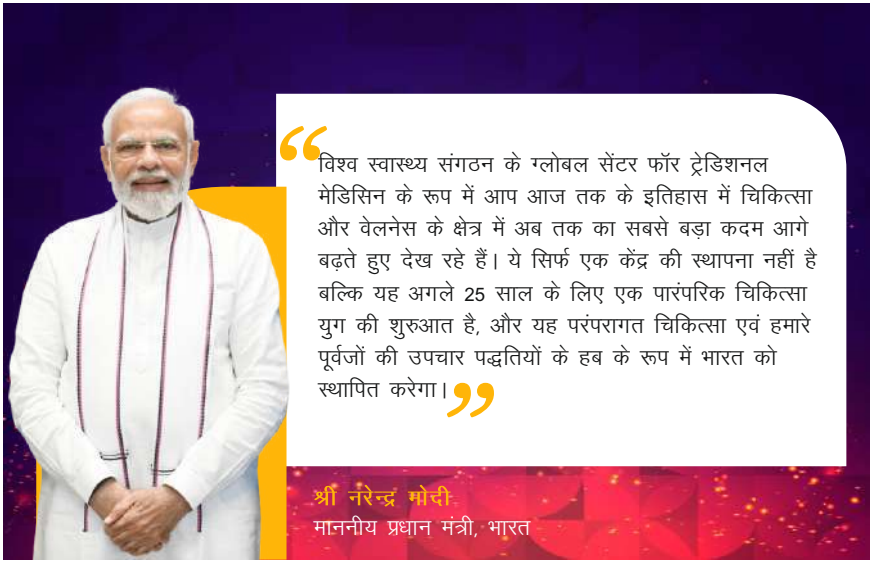

वैश्विक मान्यताः अंतर्राष्ट्रीय शिखर सम्मेलनों और मंचों में आयुष की प्रभावी भूमिका

- **पहला डब्ल्यूएचओ पारंपरिक चिकित्सा वैश्विक शिखर सम्मेलन,** "सभी के लिए स्वास्थ्य और कल्याण की ओर" 17–18 अगस्त 2023 को गांधीनगर, गुजरात, में आयोजित किया गया था। इसी सम्मेलन की कड़ी के रूप में ''गुजरात घोषणापत्र'' भी विश्व स्वास्थ्य संगठन की ओर से जारी किया गया।

डब्ल्यूएचओ पारंपरिक चिकित्सा वैश्विक शिखर सम्मेलन में गणमान्य व्यक्तियों द्वारा दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन

WHO परंपरागत चिकित्सा
वैश्विक शिखर सम्मेलन

सबके स्वास्थ्य और कल्याण के लिए समर्पित

गुजरात घोषणापत्र

- स्वदेशी ज्ञान, जैव विविधता और परंपरागत, पूरक और एकीकृत औषधि से सम्बन्धित वैश्विक प्रतिबद्धताओं की पुष्टि करता है
- गहन वैज्ञानिक अनुप्रयोगों को आजमाने पर बल देते हुए इनके माध्यम से स्वास्थ्य और कल्याण के आयामों को बेहतर समझने, उनका आकलन करने और जहाँ आवश्यकता हो, वहाँ अधिकाधिक समग्र, संदर्भ–सापेक्ष, जटिल और व्यक्तिपरक तरीकों को अपनाने पर बल देता है

- **वैश्विक आयुष निवेश और नवाचार शिखर सम्मेलन–2022**

"भारत अपनी आजादी के 75 साल पूरे होने का पर्व मना रहा है यानी आजादी का अमृत महोत्सव। मुझे विश्वास है कि अगले 25 साल का हमारा 'अमृत काल' दुनिया के कोने–कोने में पारंपरिक चिकित्सा के लिए स्वर्णिम काल साबित होगा। एक प्रकार से, आज पूरी दुनिया में पारंपरिक चिकित्सा का नया युग आरंभ हो चुका है।"

- इसी शिखर सम्मेलन में माननीय प्रधानमंत्री

70 से अधिक विदेशी प्रतिनिधियों सहित 25,000 से अधिक प्रतिभागियों ने इस शिखर सम्मेलन में भाग लिया, 70 से अधिक समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए और प्रसिद्ध एफएमसीजी कंपनियों द्वारा भागीदारी की गई।

- **विश्व आयुर्वेद कांग्रेस**

विश्व आयुर्वेद कांग्रेस (डब्ल्यूएसी) वैश्विक स्तर पर आयुर्वेद को बढ़ावा देने के लिए विश्व आयुर्वेद फाउंडेशन द्वारा स्थापित एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में कार्य करती है। वर्ष 2002 में अपनी स्थापना के समय से, यह कांग्रेस चिकित्सा के क्षेत्र में सबसे बड़ा नाम बन गई है। इसका उद्देश्य आयुर्वेद के नए क्षितिजों और प्रगतियों का पता लगाना है। 9वाँ विश्व आयुर्वेद कांग्रेस और आरोग्य एक्सपो 2022, गोवा में 8 से 11 दिसंबर तक आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम का उद्देश्य उद्योग प्रणेताओं, चिकित्सकों, पारंपरिक चिकित्सकों, शिक्षाविदों, छात्रों, दवा विनिर्माताओं, औषधीय पौधों के उत्पादकों और विपणन रणनीतिकारों सहित सभी

हितधारकों के लिए एक वैश्विक मंच प्रदान करना था। इसका उद्देश्य नेटवर्किंग और बौद्धिक आदान–प्रदान की सुविधा प्रदान करना, आयुर्वेद क्षेत्र को सुदृढ़ करना, भविष्य की परिकल्पना करना और आयुर्वेद वाणिज्य को बढ़ाने के लिए व्यवसायियों और उपभोक्ताओं के बीच समन्वय को बढ़ावा देना है।

विश्व आयुर्वेद कांग्रेस के चुनिंदा प्रतिभागियों के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

- **भारत की जी–20 अध्यक्षता**

जी–20 शिखर सम्मेलन में स्वास्थ्य कार्य समूह और **पारंपरिक चिकित्सा** में पहले से संलग्न समूहों में आयुष की सक्रिय भागीदारी– जी–20 लीडर्स घोषणापत्र में **"पारंपरिक चिकित्सा"** को शामिल किया गया।

- मंत्रालय **पारंपरिक चिकित्सा पर शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के विशेषज्ञ कार्य समूह** का भी हिस्सा है।

पारंपरिक चिकित्सा पर शंघाई सहयोग संगठन का कार्यसमूह

पृष्ठभूमि

- समरकंद में 16 सितंबर 2022 को हुए शंघाई सहयोग संगठन के शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने पारंपरिक चिकित्सा पर इस संगठन के एक नए कार्यदल का गठन किए जाने का प्रस्ताव रखा था।
- एससीओ के राष्ट्र प्रमुखों (प्रधानमंत्रियों) की परिषद की 21वीं मीटिंग के बाद उनकी ओर से जारी साझा बयान में इसे स्वीकारा गया था कि पारंपरिक चिकित्सा पर एक विशेषज्ञ कार्यसमूह को स्थापित कर सक्रिय किया जाए।

- **बिम्सटेक फोरम** का हिस्सा होने के नाते, मंत्रालय का लक्ष्य पारंपरिक चिकित्सा से संबंधित नीतियों और कार्यनीतियों को बढ़ावा देना है।

- **ब्रिक्स पारंपरिक चिकित्सा फोरम** – पारंपरिक चिकित्सा पर ब्रिक्स के उच्च–स्तरीय फोरम में आयुष

पारंपरिक चिकित्सा पर ब्रिक्स विशेषज्ञों की बैठक।

- **आयुष छात्रवृत्ति योजना**: विभिन्न देशों में औपचारिक आयुष शिक्षा के प्रति जागरूकता और रुचि बढ़ी है। शैक्षणिक वर्ष 2022–23 के लिए 32 देशों के 277 छात्र आयुष फेलोशिप योजना के तहत विभिन्न संस्थानों में आयुष शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

- **योग के वैश्विक संवर्धन के लिए अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस और इसके उल्लेखनीय स्वास्थ्य लाभः**

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 27 सितम्बर, 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाए जाने का प्रस्ताव रखा था

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 11 दिसंबर 2014 को सर्वसम्मति से प्रत्येक वर्ष 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाने के प्रस्ताव को अपनाया।

पहले आईडीवाई–2015 ने दो गिनीज बुक रिकॉर्ड बनाए, आईडीवाई –2022 ने लगभग 22. 13 करोड़ व्यक्तियों की भारी भागीदारी के साथ 'द गार्जियन रिंग ऑफ योगा' की अभिनव अवधारणा पेश की और आईडीवाई –2023 ने 23.44 करोड़ भागीदारी के साथ 192 देशों तक अपनी पहुँच का विस्तार किया। आईडीवाई–2023 'ओशन रिंग ऑफ योग', 'योग फ्रॉम आर्कटिक टू अंटार्कटिक', 'योग एट नॉर्थ एंड साउथ पोल्स', 'योग भारतमाला' और 'योग सागरमाला' की अवधारणाओं का साक्षी बना।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवसः
योग को मुख्यधारा में शामिल करना

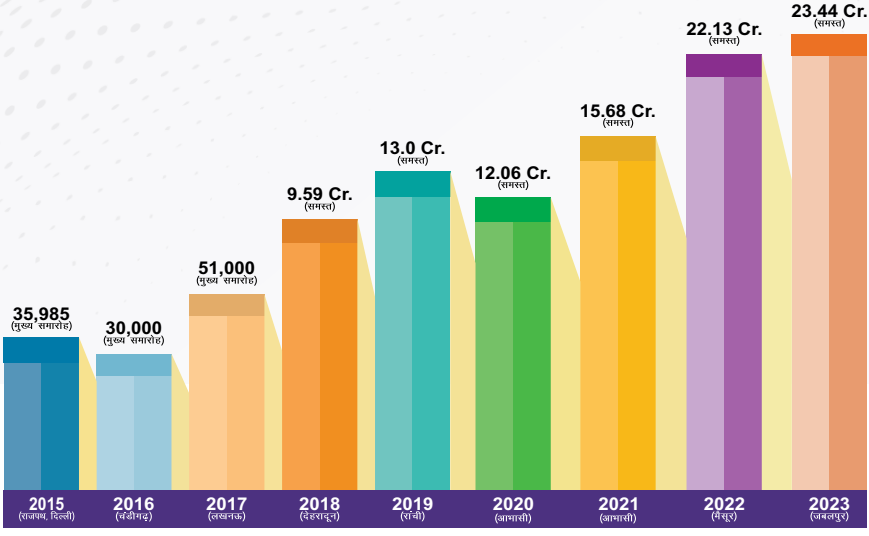

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2023 की मुख्य बातें

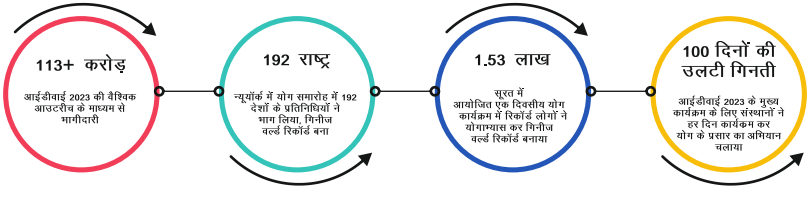

योग में यादृच्छिक नियंत्रित परीक्षण (आरसीटी) के उल्लेखनीय परिणाम

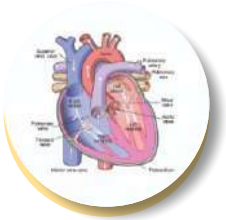

49 क्लीनिकल योग एवं हृदय रोग में परीक्षण

245 योग एवं अवसाद में नैदानिक परीक्षण

52 योग और कमर दर्द में नैदानिक परीक्षण

6 आयुष उद्योग

आयुष विनिर्माण, निर्यात में वृद्धि और एमएसएमई तथा स्टार्टअप के उदय के साथ एक क्षेत्र के रूप में आयुष का इस तरह से विकास हुआ है जो आर्थिक विकास में अपना योगदान देता है। एक संपन्न विनिर्माण उद्योग और बढ़ते निर्यात के साथ आयुष क्षेत्र का आर्थिक महत्व, वैश्विक बाजार में एक पावरहाउस के रूप में अपनी स्थिति को और मजबूत करता है।

1. औद्योगिक विकास एवं सुगमता

आयुष उद्योग

आयुष में 53,023 एमएसएमई

भारत के आयुष बाजार का आकार 43.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर (₹3599 बिलियन) (₹1931 बिलियन – विनिर्माण, ₹1667 बिलियन – सेवाएँ)*

विनिर्माण क्षेत्र– 6 गुना वृद्धि (2014–20); ~8 गुना वृद्धि (2014–22; अनुमानित)

भारत का कुल आयुष निर्यातः US$1.54 बिलियन (₹114 बिलियन)

वर्तमान में आयुर्वेद को 30 से अधिक देशों में पारंपरिक चिकित्सा पद्धति के रूप में मान्यता प्राप्त है।

आयुष और हर्बल उत्पाद/दवाएँ 150 से अधिक देशों में निर्यात की जा रही हैं।

आयुष क्षेत्र का विस्तार निवेश के विभिन्न मार्गों को बढ़ावा दे रहा है। दुनिया भर में कई बड़े उद्यमी, तकनीकी कंपनियां और चिकित्सा केंद्र तेजी से इसकी ओर आकर्षित हो रहे हैं।

महानिदेशक
विश्व स्वास्थ्य संगठन

जीएआईआईएस 2022

@MSME का उद्यम पोर्टल (नवंबर 2022)
आरआईएस आयुष बाजार अध्ययन 2021 (विनिर्माण के लिए) और आरआईएस सेवा क्षेत्र अंतरिम रिपोर्ट (सेवाओं के लिए)

आयुष बाजार आकार में अप्रतिम वृद्धि

वर्ष 2014 में आयुष विभाग को आयुष मंत्रालय में प्रोन्नत करने के बाद से आयुष उद्योग और बाजार में बड़ी वृद्धि देखी गई है। आयुष विनिर्माण उद्योग 2014–15 में 21,697 करोड़ रुपये (2.85 बिलियन अमरीकी डालर) था और 2020 के आरआईएस के अध्ययन में, आयुष विनिर्माण उद्योग का आकार 1,37,800 करोड़ रुपये (18.1 बिलियन अमरीकी डालर) होने का अनुमान लगाया गया है। यह बढ़त 7 वर्षों में 6 गुना हुई है।

इसी तरह, आरआईएस के आरंभिक अध्ययन के अनुसार आयुष सेवा क्षेत्र में 1,66,797 करोड़ रुपये का राजस्व का आकँड़ा प्रदर्शित होता है।

वर्ष 2022–2023 के लिए आयुष उत्पादों का वैश्विक क्षेत्रवार व्यापार

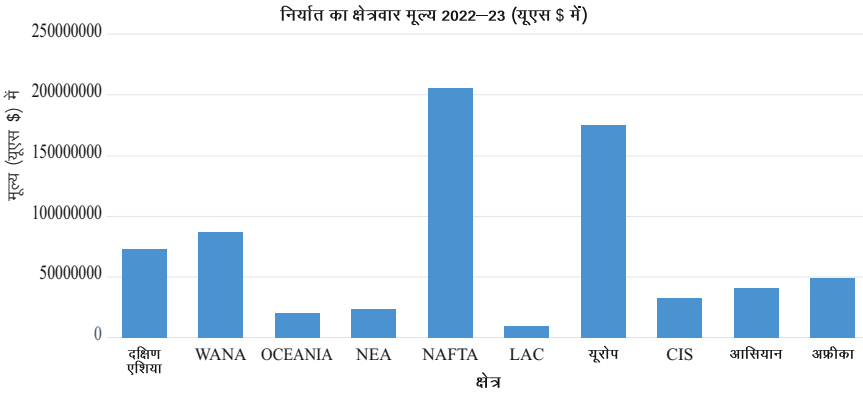

आयुष उद्यमिता का संवर्धन

- वर्तमान में विकसित हो रहे आयुष क्षेत्र में बड़े पैमाने पर नवाचार को बढ़ावा देते हुए, आयुष क्षेत्र में उद्यमिता के लिए एक अनुकूल तंत्र का निर्माण हो रहा है। इसके अनुरूप, आयुष मंत्रालय ने अखिल भारतीय स्तर पर कार्यान्वयन के लिए मेडिकल वैल्यू ट्रैवल के लिए **चैंपियन सेवा क्षेत्र योजना नामक एक केंद्रीय क्षेत्र** योजना विकसित की थी। इस योजना के तहत, भारतीय चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय आयोग (एनसीआईएसएम) अधिनियम, 2020 या राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग (एनसीएच) अधिनियम, 2020 के तहत मान्यता प्राप्त पद्धतियों के सुपर स्पेशियलिटी अस्पतालों/डे केयर केंद्रों की स्थापना के लिए निजी निवेशकों को ब्याज सब्सिडी के रूप में वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

"स्टार्टअप हमारे देश में नए प्रकार के wealth creators हैं"

माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 15 अगस्त, 2021 को अपने स्वतंत्रता दिवस भाषण में भारत के स्टार्टअप और स्टार्टअप तंत्र को दुनिया में सर्वश्रेष्ठ बनाने की दिशा में सरकार द्वारा लगातार काम करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

- अकादमिक ज्ञान का लाभ उठाते हुए उद्यमिता के संवर्धन के लिए, आयुष मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त निकाय–अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए) ने एक इन्क्यूबेशन सेंटर अर्थात एआईआईए–आईसीएआईएनई (नवाचार और उद्यमिता के लिए इन्क्यूबेशन सेंटर) स्थापित किया है ताकि नए युग के इन उद्यमों के एक समूह को संगठित किया जा सके।

- आयुष उद्यमों को बढ़ावा देने के लिए आयुष मंत्रालय ने सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय (एमएसएमई) के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। एमएसएमई मंत्रालय, उद्यम पोर्टल के नवीनतम आँकड़ों के अनुसार,

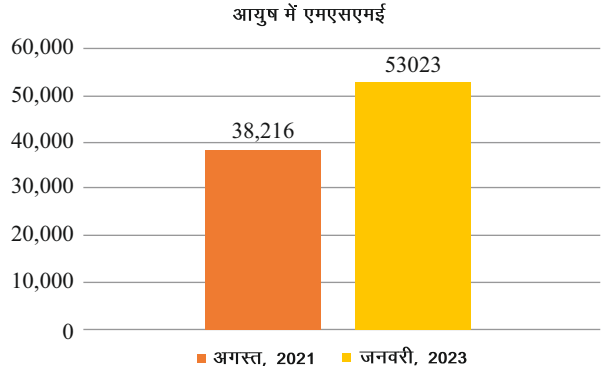

- इसके साथ ही, स्टार्टअप तंत्र ने भी आयुष क्षेत्र में गति प्राप्त की है। इस तेजी से बढ़ते क्षेत्र में 900 डीपीआई आईटी–मान्यता प्राप्त स्टार्टअप (दिसंबर 2022 तक) हैं। ये स्टार्टअप न केवल मेट्रो शहरों से आ रहे हैं, बल्कि टियर–2 और 3 शहरों से भी आ रहे हैं (इनमें से 52% मान्यता प्राप्त स्टार्टअप टियर–2 एवं टियर–3 शहरों से हैं), जो आधुनिक उद्यमशीलता के उपलब्ध अवसरों के साथ आयुष की पैठ और इसकी गहरी जड़ो वाली सांस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस क्षेत्र में घरेलू और अपार वैश्विक क्षमता को भुनाने के अलावा, इन स्टार्टअप ने लगभग 8500 नौकरियों के सृजन में भी सहायता की है।

- आयुष स्टार्टअपों को प्रोत्साहित करने और सशक्त बनाने की पहल के रूप में आयुष स्टार्टअप ग्रैंड चैलेंज शुरू किया गया।

- केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद ने ''एकेडमिया–इंडस्ट्री रिसर्च इन्क्यूबेशन फॉर वैल्यू चेन अपग्रेडेशन'' (एआरआईवीयू) नामक इन्क्यूबेशन प्रकोष्ठ की स्थापना की है। इस प्रकोष्ठ का उद्देश्य सिद्ध चिकित्सा की विभिन्न व्यवस्थाओं से संबंधित नये विचारो और नवाचारों का उपयोग कर उत्पादों, प्रक्रियाओं और सेवाओं का निर्माण वाणिज्यिक और सामाजिक लाभ के लिए करना है।

- अनुसंधान एवं विकास प्रौद्योगिकियों और उत्पादों के व्यावसायीकरण के लिए एक्सीलरेटिंग ग्रोथ ऑफ न्यू इंडिया इनोवेशन (एजीएनआईआई) के साथ सीसीआरएस ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

आयुष निर्यात संवर्धन परिषद (आयुषएक्सिल)

- यह आयुष मंत्रालय द्वारा विश्व स्तर पर आयुष उत्पादों और सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए स्थापित किया गया है और वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा समर्थित परिषद है। इसे आधिकारिक तौर पर 20 अप्रैल, 2022 को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा गांधीनगर, गुजरात में आयोजित वैश्विक आयुष निवेश एवं नवाचार शिखर सम्मेलन के दौरान आरम्भ किया गया था। इसका उद्देश्य आयुर्वेद, होम्योपैथी, सिद्ध, सोवा रिग्पा और यूनानी पद्धतियों के उत्पादों के निर्यात की देखरेख करना और इन क्षेत्रों से संबंधित व्यापार मुद्दों का समाधान करना है।

- **आयुष वीजा**

आयुष वीजा

केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने भारत में चिकित्सीय देखभाल, कल्याण और योग जैसे चिकित्सा उपचार की इच्छा रखने वाले विदेशी नागरिकों के लिए एक नई वीजा श्रेणी, 'आयुष वीजा' शामिल की है। आयुष वीजा का उद्देश्य आयुष प्रणालियों या भारतीय चिकित्सा प्रणालियों के तहत इलाज के लिए भारत आने वाले विदेशियों के लिए एक विशेष वीजा योजना शुरू करने की आवश्यकता को पूरा करना है।

भारत में आयुष चिकित्सा उपचार चाहने वाले विदेशी नागरिकों के लिए गृह मंत्रालय द्वारा एक विशेष वीजा श्रेणी (आयुष वीजा) अधिसूचित की गई है।

- **व्यापार करने को सुगम करना और अनुपालन प्रकियाओं का सरलीकरण**

1. आयुष क्षेत्र में 100% एफडीआई की अनुमति एक स्वचालित प्रक्रिया के माध्यम से प्रदान की गई है।

2. आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी दवाओं की विनिर्माण इकाईयाँ स्थापित करने हेतु ड्रग लाइसेंस को ई–औषधि के माध्यम से ऑनलाईन आवेदन करने की सुविधा उपलब्ध कराकर त्वरित, कागज रहित और अधिक पारदर्शी बनाया गया है, जिससे व्यवसाय करने की सुगमता काफी बढ़ी है।

3. आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी दवाओं के लाइसेंस को स्थायी बना दिया गया है अर्थात एक बार पंजीकरण शुल्क के साथ, उत्पाद का लाइसेंस प्रत्येक वर्ष स्व–अनुपालन घोषणा को ऑनलाइन प्रस्तुत करने के अधीन आजीवन वैध होगा– इससे व्यापार करने की सुगमता में काफी सुधार होगा।

4. आयुष उत्पादों का विनिर्माण करने वाले अग्रणी राज्यों ने 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' (ईओडीबी) सुधारों को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है। इनमें उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, गुजरात, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु

और तेलंगाना शामिल हैं। औद्योगिक/निवेश नीतियों और औद्योगिक केंद्रों के स्थान के माध्यम से निवेश सुविधा के साथ, राज्यों ने उत्पाद निर्माण के लिए एक मजबूत तंत्र बनाया है। कई राज्य आयुष सेवाओं और कच्चे माल के संबद्ध उद्योगों की अवस्थिति का नीतिगत लाभ भी उठाते हैं (जैसा कि "भारत में आयुष क्षेत्र–संभावनाएं और चुनौतियां" के लिए आरआईएस रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है)।

5. औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 1940 और नियम, 1945 की अनुपालन प्रक्रिया के सरलीकरण हेतु, आयुष मंत्रालय ने औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 1945 के तहत नियमों, फॉर्म और अनुसूचियों का गहन विश्लेषण किया। विश्लेषण के बाद, 35 अनुपालनों की पहचान समीक्षा योग्य/हटाए जाने योग्य के रूप में की गई जिन्हें आसान बनाया जा सकता है। इन 35 अनुपालनों में से, एएसयू दवाओं से संबंधित 23 अनुपालनों को आसान बनाया गया था और पहले ही 1.10.2021 को आधिकारिक राजपत्र में प्रकाशित किया जा चुका है। इसे डीपीआईआईटी के नियामक अनुपालन पोर्टल पर अपडेट किया गया है।

7 गुणवत्ता नियंत्रण और मानकीकरण

आयुष मंत्रालय ने आयुष–आधारित उत्पादों को विकसित करते समय 'गुणवत्ता' को एक महत्वपूर्ण मानदंड के रूप में लागू करने के लिए कई उपाय किए हैं। ये उपाय स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने वाले विभिन्न प्राचीन ज्ञान–आधारित दृष्टिकोणों के अनुप्रयोग के बारे में भारत के विभिन्न हिस्सों में विश्वास पैदा करने और जागरूकता बढ़ाने के लिए जीएमपी दिशानिर्देशों का पालन करते हैं। आयुष मंत्रालय ने विश्व स्तर पर इसे वितरित करने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के साथ भी सहयोग किया। मंत्रालय ने आयुष औषधि गुणवत्ता एवं उत्पादन संवर्धन योजना (एओजीयूएसवाई), भेषज सतर्कता कार्यक्रम (आयुष सुरक्षा) और बीआईएस, आईएसओ आदि जैसे अंतरराष्ट्रीय मानक संगठनों में समर्पित कार्य समूहों जैसी पहलों के माध्यम से गुणवत्ता नियंत्रण और मानकीकरण को प्राथमिकता दी है।

सीडीएससीओ में आयुष प्रकोष्ठः

- केंद्रीय स्तर से आयुर्वेदिक, सिद्ध, यूनानी और होम्योपैथी (एएसयू एंड एच) दवाओं के विनियमन की निगरानी के लिए 05.02.2018 से केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन में आयुष वर्टिकल बनाया गया है।

- आयुष उत्पादों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए एक सेन्ट्रल सेक्टर योजना अर्थात् **आयुष औषधि गुणवत्ता एवं उत्पादन संवर्धन योजना (एओजीयूएसवाई)** शुरू की गई है। एओजीयूएसवाई योजना के तीसरे घटक अर्थात आयुष दवाओं के लिए तकनीकी मानव संसाधन और क्षमता निर्माण कार्यक्रमों सहित केंद्रीय और राज्य नियामक ढाँचे को मजबूत करने के लिए आयुष मंत्रालय ने राज्यों में एएसयू एंड एच उद्योग और नियामक कर्मियों हेतु मानव संसाधनों के विकास का एक व्यापक कार्यक्रम शुरू किया है।

भेषज सतर्कता (फार्माकोविजिलेंस) पहलें

- एओजीयूएसवाई योजना के तहत आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी और होम्योपैथी दवाओं के लिए भेषज सतर्कता कार्यक्रम स्थापित किया गया है।

आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी एवं होम्योपैथी दवाओं के लिए फार्माकोविजिलेंस कार्यक्रम

आयुष औषधि गुणवत्ता एवं उत्पादन संवर्धन योजना

- एएसयू एंड एच औषधियों के लिए भेषज सतर्कता पहल के अंतर्गत एक राष्ट्रीय केन्द्र, 5 मध्यवर्ती केन्द्र, 99 परिधीय भेषजसतर्कता केन्द्र स्थापित किए गए हैं।

अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान, एएसयू और एच दवाओं के लिए भेषज सतर्कता कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए राष्ट्रीय भेषज सतर्कता समन्वय केंद्र (एनपीवीसीसी) के रूप में भी कार्यरत है।

कार्यक्रम का उद्देश्य एएसयू और एच औषधियों में औषधि सुरक्षा की निगरानी कर भारतीय जनमानस के लिए रोगी सुरक्षा में सुधार करना है और इस तरह इन औषधियों के उपयोग से जुड़े जोखिम को भी कम करना है। इसके अतिरिक्त, यह कार्यक्रम विभिन्न हितधारकों के बीच जागरूकता उत्पन्न करने, संदिग्ध प्रतिकूल प्रभावों की रिपोर्टिंग के तरीके विकसित करने और प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में प्रदर्शित होने वाले भ्रामक विज्ञापनों की निगरानी पर ध्यान केन्द्रित करता है।

- **बीआईएस में आयुष इकाई:** आयुष उत्पादों का वर्तमान में 150 से अधिक देशों में या तो दवा या खाद्य पूरक के रूप में, कारोबार किया जाता है। आयुष पद्धतियों की सुरक्षा, गुणवत्ता और प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए, इस इकाई के माध्यम से बीआईएस के सहयोग से अंतर्राष्ट्रीय मानकों की स्थापना की जा रही है। इस पहल का उद्देश्य न केवल अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देना है, बल्कि आयुष उत्पादों के प्रति उपभोक्ता विश्वास में भी वृद्धि करना है। इस इकाई ने अब तक आयुष पर 91 भारतीय मानकों को अधिसूचित किया है।

- आईएसओ/टीसी 215– स्वास्थ्य सूचना के तहत आईएसओ में एक समर्पित कार्य समूह (डब्ल्यूजी 10–पारंपरिक चिकित्सा) बनाया गया – जो आयुष सूचना (आयुष इन्फॉर्मेटिक्स) पर अंतर्राष्ट्रीय मानक तैयार करता है।

- एएसयू और एच (आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी और होम्योपैथी) औषधियों के भेषज संहिता मानकों को विकसित करने और चिकित्सा की इन पद्धतियों के लिए केंद्रीय औषध परीक्षण सह अपीलीय प्रयोगशाला के रूप में कार्य करने के लिए **भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी भेषज संहिता आयोग (पीसीआईएम एंड एच)** आयुष मंत्रालय के अधीनस्थ कार्यालय के रूप में स्थापित किया गया है। पीसीआईएम एंड एच ने अब तक एकल औषध गुणवत्ता मानकों (भेषज संहिता) के 2259 एएसयू एंड एच मोनोग्राफ और बहु घटक औषधयोग गुणवत्ता मानकों (भेषज संहिता) के 405 मोनोग्राफ विकसित किए हैं।

Pharmacopoeia and Formularies

Ayush system	Monographs of Single drugs quality standards (Pharmacopoeia)	Monographs of Multi ingredient Formulations quality standards (Pharmacopoeia)
Ayurveda	665	203
Unani	338	201
Siddha	139	01
Homoeopathy	1117	--

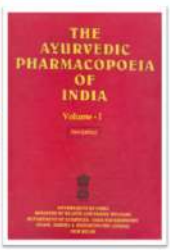

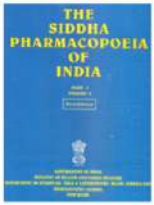

Ayurvedic Formulary of India	National Formulary of Unani Medicine	Siddha Formulary of India	Homoeopathy Pharmacopoeia of India
985 (3) including 280 mineral-based formulations	1229 (in 6 volumes)	399 (2)	10 Volumes comprising of 1117 monographs

- हर्बल ड्रग मानकों में एकरूपता,"वन हर्ब–वन स्टैंडर्ड": पीसीआई एंड एच और भारतीय भेषजसंहिता आयोग (आईपीसी) के बीच सहयोग "वन हर्ब–वन स्टैंडर्ड" विकसित करने के उद्देश्य से सहयोग समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर करना, एक महत्वपूर्ण कदम है। इस साझेदारी के माध्यम से निर्मित प्रत्येक मोनोग्राफ में अंतर्राष्ट्रीय गुणवत्ता आवश्यकताओं के साथ–साथ भारतीय मानकों को वैश्विक मानक के साथ अनुकूलित करते हुए भारतीय मानकों को शामिल किया जाएगा। यह पहल न केवल भारत में व्यापार करने में सरलता को बढ़ाती है बल्कि भारतीय वनस्पति विज्ञान के समग्र व्यापार में भी सुधार करती है। यह आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम का प्रतिनिधित्व करता है, आत्मनिर्भरता पर जोर देता है और वैश्विक बाजार में भारत की स्थिति को सुदृढ़ करता है।

पीसीआईएंडएच और आईपीसी के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

- मई 2022 में **अधिसूचित खाद्य सुरक्षा और मानक (आयुर्वेद आहार) विनियम, 2022**: यह पारंपरिक खाद्य व्यवस्था को बढ़ावा देगा, खाद्य सुरक्षा मानकों को सुनिश्चित करेगा, और आयुर्वेदिक खाद्य पदार्थों में उपयोक्ताओं के विश्वास को संभावित रूप से बढ़ाएगा। इसके अतिरिक्त, यह उपभोक्ताओं के समग्र स्वास्थ्य और कल्याण में योगदान करते हुए पारंपरिक व्यंजनों के नवाचार और संरक्षण को प्रोत्साहित कर सकता है।

8 अन्य पहलें और उपलब्धियाँ

1. सतत विकास लक्ष्यों की दिशा में प्रयास (एसडीजी)

- **"लोक – पुरुष साम्य सिद्धांत"** आयुर्वेद के सिद्धांत का प्रतीक है। जिसके अनुसार ब्रह्मांड में मौजूद संरचनाएँ व्यक्ति के भीतर भी मौजूद हैं। रोग की रोकथाम और स्वास्थ्य संवर्धन पर जोर देते हुए, आयुर्वेद मानव और प्रकृति के बीच संबंध का सशक्त करके स्थिरता को बढ़ावा देता है। इस लोकाचार में निहित, आयुर्वेद, एक प्राचीन समग्र स्वास्थ्य प्रणाली के रूप में, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और मानव कल्याण के साथ पारिस्थितिकी के सामंजस्यपूर्ण सह–अस्तित्व को प्राथमिकता देता है।

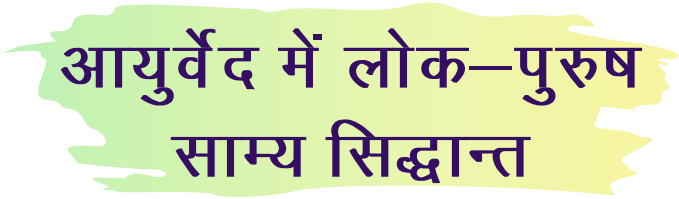

आयुर्वेद हमे सिखाता है कि मानव स्वास्थ्य को समझने की कुंजी ब्रह्मांड के साथ हमारे गहन संबंध की पहचान में निहित है

दूसरे शब्दों में, पुरुष लोक (ब्रह्मांड) को इंगित करता है

हम मानवों को एक अलग इकाई के बजाय पर्यावरण और व्यक्ति के बीच सामंजस्य के रूप में देखा और समझा जाना चाहिए

- एसडीजी–3 सभी उम्र के लोगों के लिए स्वस्थ जीवन और कल्याण सुनिश्चित करने के महत्व पर जोर देता है, जो प्रमुख स्वास्थ्य प्राथमिकताओं को कवर करने वाले नौ लक्ष्यों द्वारा समर्थित है। इनमें मातृ, नवजात और बाल स्वास्थ्य, महामारी, संचारी रोग, गैर–संचारी रोग (एनसीडी) और मादक द्रव्यों का सेवन शामिल हैं। आयुष निवारक, प्रोत्साहक, उपचारात्मक, उपशामक और पुनर्वास देखभाल के माध्यम से शरीर को मजबूत करके अच्छे स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है।

- **एसडीजी–2 जीरो हंगरः** कुपोषण के संकट को दूर करने के लिए आयुष सरल, किफायती और प्रभावी समाधान प्रदान करता है।

- बढ़ती वैश्विक पर्यावरण चेतना विश्व भर में विभिन्न संगठनों और नेतृत्वकर्ताओं के आचरण में स्पष्ट है। विश्व के पहले **डब्ल्यूएचओ वैश्विक परंपरागत औषध केंद्र (जीटीएमसी)** की स्थापना और **वैश्विक आयुष निवेश और नवाचार शिखर सम्मेलन (जीएआईआईएस), 2022** के दौरान, विविध हितधारकों से सराहना प्राप्त करते हुए अद्वितीय पर्यावरण–अनुकूल पद्धतियों को अपनाया गया था। मेगा इवेंट में एकल उपयोग प्लास्टिक के प्रसार को रोकने के लिए और **कार्बन फुटप्रिंट को कम करने के देश के संकल्प के लिए समर्पित प्रयास** को प्रतिध्वनित किया गया। **आयोजनों के दौरान अनुमानतः 1 लाख से अधिक प्लास्टिक की बोतलें, 15000 प्लास्टिक टैग और 50 हजार प्लास्टिक कटलरी के उपयोग की संभावना थी, जिसका उपयोग न करने से 119437.5 किलोग्राम कार्बन डाइऑक्साइड के समतुल्य (CO_2e) की अनुमानित कमी आई।**

- **"वृक्ष आयुर्वेद"** वनस्पति जगत के स्वास्थ्य के लिए एक समर्पित शाखा, प्राकृतिक और जैविक खेती के सिद्धांतों पर आधारित सबसे प्राचीन, कृषि और वानिकी पद्धति है जिसमें पोषण गुणों में वृद्धि करने, बीज संरक्षण, पूर्व–उपचार, अंकुरों के पोषण, पौधों का अनुरक्षण, कटाई उपरांत प्रसंस्करण और भंडारण की कार्यनीतियां शामिल हैं।

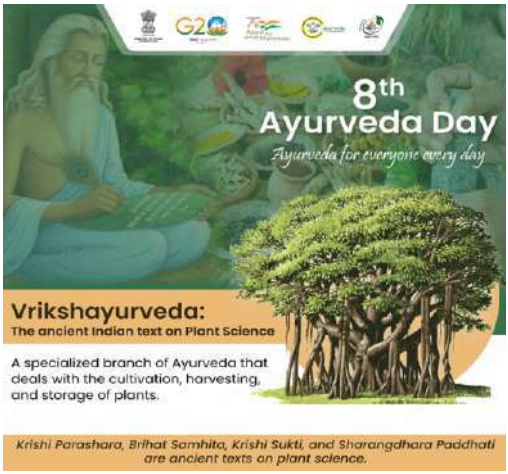

- **राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (एनएमपीबी)** औषधीय पादपों से संबंधित सभी मामलों और व्यापार में वृद्धि, निर्यात, संरक्षण और खेती के लिए समर्थन नीतियों और कार्यक्रमों के साथ समन्वय स्थापित करने हेतु भारत सरकार द्वारा स्थापित किया गया। एनएमपीबी का प्राथमिक जनादेश भारत में विभिन्न मंत्रालयो/विभागों/संगठनों के बीच समन्वय के लिए एक उपयुक्त तंत्र विकसित करना और केंद्र/राज्य और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर औषधीय पादप क्षेत्र के समग्र (संरक्षण, खेती, व्यापार और निर्यात) विकास के लिए समर्थन नीतियों/कार्यक्रमों को कार्यानवित करना है। एनएमपीबी ने जंगलों में औषधीय पादप संसाधनों को बढ़ाने और किसानों के खेतों में उनकी बड़े पैमाने पर खेती को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न कार्यकलाप शुरू किए हैं।

  राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (एनएमपीबी) के प्रयास एसडीजी में निम्नलिखित के द्वारा महत्वपूर्ण योगदान देते है–

  - **संसाधनों का संरक्षण और सतत उपयोगः** यथा–स्थान संरक्षण और पूर्व–स्थित संरक्षण प्रयासों को बढ़ावा देकर और स्थानीय औषधीय पौधों तथा सुगंधित प्रजातियों को बढ़ाकर, एनएमपीबी प्राकृतिक संसाधनों के स्थायी प्रबंधन में योगदान देता है। स्थायी खेती तकनीकों पर समुदायों को शिक्षित करने से अधिक कुशल संसाधन उपयोग हो सकता है।

  - **गुणवत्ता आश्वासन और मानकीकरणः** एनएमपीबी उत्तम कृषि और संग्रह प्रथाओं (जीएसीपी), गुणवत्ता मानकों और प्रमाणन तंत्र पर बल देता है और यह सुनिश्चित करता है कि औषधीय पौधों को इस तरह से उगाया, काटा और संसाधित किया जाए जिससे पर्यावरणीय प्रभाव कम हो।

- **एनएएम योजना के 'औषधीय पौधे' घटक के तहत,** राज्यों के चुनिंदा जिलों में चिन्हित किए गए समूहों/अंचलों में प्राथमिकता प्राप्त औषधीय पादपों की बाजारोन्मुख कृषि को सहायता प्रदान करना और मिशन मोड में कार्यान्वित करना।

  आयुष मंत्रालय स्कीम के प्रचालनात्मक दिशानिर्देशों के अनुसार 140 औषधीय पादपों की उपलब्धता स्थिति और बाजार मांग पर निर्भर कृषि लागत का 30%, 50% और 75% दर पर औषधीय पादपों के लिए सब्सिडी प्रदान करके देश भर में किसानों की भूमि पर औषधीय पादपों की खेती को सहायता प्रदान कर रहा है।

राष्ट्रीय आयुष मिशन की एक पूर्ववर्ती योजना के 'औषधीय पादप' घटक के तहत राज्यों के चयनित जिलो में चिन्हित क्लस्टरों/क्षेत्रों में प्राथमिकता वाले और बाजार की जरूरतों के अनुकूल औषधीय पौधों की खेती के लिए मिशन के तहत सहयोग किया जा रहा है।

आयुष मंत्रालय पूरे देश में 140 प्रकार के औषधीय पौधों की खेती के लिए किसानों को सब्सिडी प्रदान कर रहा है। योजना के दिशानिर्देशों के तहत उपलब्धता और बाजार की माँग को देखते हुए सब्सिडी उत्पादन की लागत के 30%, 50% तथा 75% की दर से दी जाती है।

राष्ट्रीय आयुष मिशन की योजना के 'औषधीय पादप' घटक के तहत औषधीय पौधों की खेती का समर्थन करने के आयुष मंत्रालय के प्रयासों ने कई सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) में योगदान किया है, जिनमें शामिल हैं:

- **एसडीजी 1: गरीबी उन्मूलन** – औषधीय पौधों की खेती में किसानों का समर्थन करने की यह पहल उन्हें अतिरिक्त आय के अवसर प्रदान करती है, जिससे गरीबी कम होती है और ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है।
- **एसडीजी 2: भुखमरी उन्मूलन** – औषधीय पौधों की खेती कृषि गतिविधियों में विविधता लाती है, वैकल्पिक आय और पोषण स्रोत प्रदान करके संभावित रूप से खाद्य सुरक्षा बढ़ाती है।
- **एसडीजी 3: उत्तम स्वास्थ्य और कल्याण** – औषधीय पौधों की खेती का संवर्धन, पारंपरिक दवाओं तक पहुँच का समर्थन करता है और समग्र स्वास्थ्य तथा कल्याण को बढ़ाता है।
- **एसडीजी 8: सम्मानजनक कार्य और आर्थिक विकास** – बाजार संचालित खेती ग्रामीण रोजगार के अवसर पैदा करती है तथा आर्थिक विकास और समावेशी विकास को बढ़ावा देती है।
- **एसडीजी 12: जिम्मेदार उपभोग और उत्पादन** – प्राथमिकता वाले पौधों की खेती का समर्थन, स्थायी आपूर्ति श्रृंखला, जिम्मेदार संसाधन प्रबंधन और अपशिष्ट में कमी को बढ़ावा देता है।

- आयुष मंत्रालय ने **वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के साथ त्रिपक्षीय समझौता ज्ञापन (एमओयू)** पर हस्ताक्षर किए हैं ताकि अनुसंधान एवं विकास, सत्यापन को बढ़ावा दिया जा सके, सुविधा प्रदान की जा सके एवं औषधीय पौधों और उनके मूल्य वर्धित उत्पादों (आयुर आहार) से संबंधित कृषि प्रौद्योगिकियों को लागू किया जा सके। यह पहल संवहनीयता के आदर्शों के अनुरूप है। यह समझौता ज्ञापन पारंपरिक कृषि पद्धतियों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकीय उपकरणों का उपयोग करता है, और सामाजिक आर्थिक विकास का समर्थन करता है, जिससे मनुष्यों, पौधों और पशुओं को समान रूप से लाभ होता है।

- **आयुष चिकित्सा शिक्षा क्षेत्र में नियामक सुधार**: एनसीआईएसएम अधिनियम, 2020 और एनसीएच अधिनियम, 2020 के अधिनियमन ने सतत सुधार के लक्ष्यों (एसडीजी) के अनुरूप गुणवत्ता मानकों और पारदर्शिता में सुधार किया है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा:

पारदर्शिता, प्रतिभा को वरीयता तथा विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षा पर फोकस के साथ आयुष शिक्षा में सुधार

आयुर्वेद, यूनानी, सिद्ध और सोवा–रिग्पा, शिक्षा अब शिक्षक केंद्रिक से छात्र केंद्रिक हो रही है
एनईपी के अनुकूल बनाया गया एक योग्यता आधारित पाठ्यक्रम वर्ष 2030 की चुनौतियों को अनुमानित करता है
एनसीआईएसएम ने कुशल प्रबंधन के लिए एलएमएस और आयुष आइडी को अपनाया है। इसके साथ ही एनसीआईएसएम पाठ्यक्रम पुनर्गठन के लिए एक विशिष्ट सॉफ्टवेयर भी लेकर आया है
एक सामान्य ट्रांस्क्रिप्ट, अकादमिक कैलेंडर और संशोधित मूल्यांकन विधि राष्ट्रीय शिक्षा को सुव्यवस्थित करती है
स्नातक और परास्नातक स्तर पर छात्रवृत्ति कार्यक्रम, प्रकाशन अनुदान, औद्योगिक–अकादमिक संवाद नवाचार को बढ़ावा देते हैं
प्रस्तावित सुपर स्पेशलिटी पाठ्यक्रम, औद्योगिक जुड़ाव संबंधी गतिविधियाँ और अनेक मासिक शोधपत्र प्रसार निरंतर प्रगति को प्रोत्साहित करते हैं

ये अधिनियम **एसडीजी 3** लक्ष्य प्राप्त करने में भी सहायता करते हैं, विशेष रूप से लक्ष्य 3.c.1, जो स्वास्थ्य कार्यकर्ता की क्षेत्रवार संख्या और वितरण बढ़ाने पर केंद्रित है, और 3.b.2 जो चिकित्सा अनुसंधान और बुनियादी स्वास्थ्य क्षेत्रों के लिए आधिकारिक विकास सहायता पर जोर देता है।

स्कूली पाठ्यक्रमों में आयुर्वेद और योग को एकीकृत करने के प्रयास चल रहे हैं! इसके लिए उच्च शिक्षा विभाग राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लिए एक कार्यान्वयन समिति का गठन हुआ है। यह **एसडीजी 3 (उत्तम स्वास्थ्य और कल्याण) और 4 (गुणवत्तापूर्ण शिक्षा)** में योगदान कर समग्र स्वास्थ्य शिक्षा को बढ़ावा देगा।

- **आयुष संस्थानों में पर्यावरण–अनुकूल परिसरों का विकास करना:**

  आयुष मंत्रालय पर्यावरण–अनुकूल पहल और प्रयासों के माध्यम से पर्यावरणीय रूप से संवहनीय परिसरों को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है।

पर्यावरण अनुकूल परीसर

प्लास्टिक का उपयोग नहीं

एक छात्र एक पौधा

कार्बन उत्सर्जन नहीं

ठोस अपशिष्ट प्रबंधन प्लांट

2. राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (एनएमपीबी)

- "ई–चरक", भुवन ई–हर्ब, किसानों और जनता के लिए एनएमपीबी द्वारा की गई एक पहल

- एनएमपीबी की योजनाएँ

सेंट्रल सेक्टर योजना

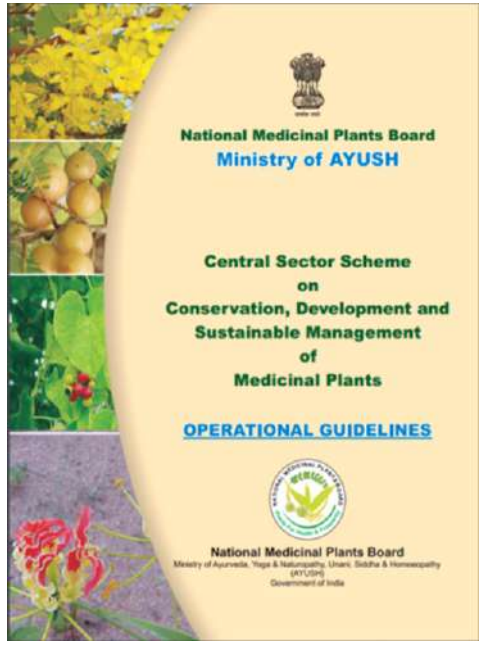

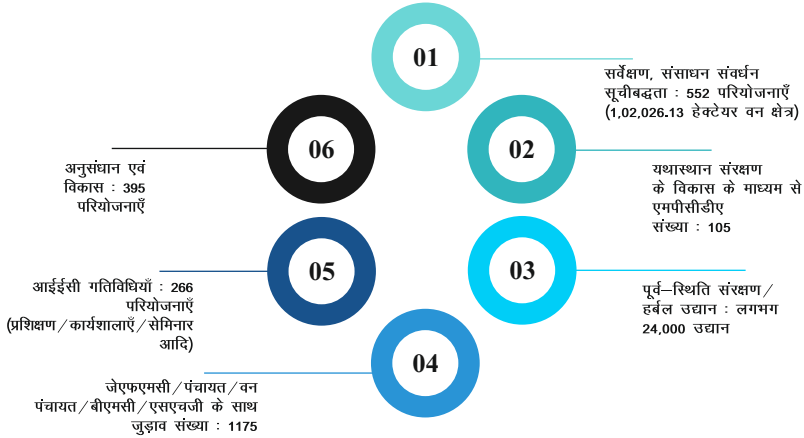

केन्द्र प्रायोजित योजना (पूर्ववर्ती योजना)

- 2,35,273 हैक्टेयर में औषधीय पादपों की खेती
- रोपण सामग्री की आपूर्ति के लिए नर्सरियों की स्थापना – 1278
- फसलोपरांत प्रबंधन – 629
- प्रसंस्करण इकाइयाँ – 33
- आरसीसी / डीसीसी जैसी विपणन अवसंरचना – 42
- सीड जर्म प्लाज्मा सेंटर –10

3. आईईसी – सूचना शिक्षा और संचार गतिविधियाँ

गतिविधियों के वार्षिक रुझान

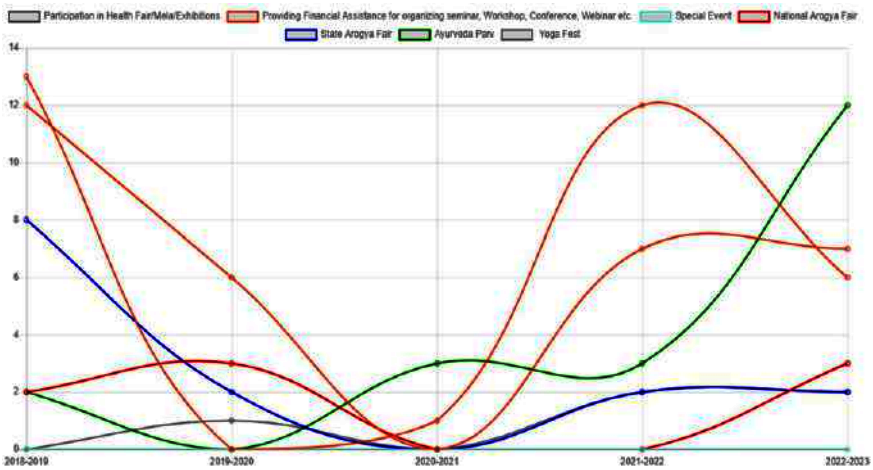

- **अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला 2023**

3 नवंबर, 2023 | वर्ल्ड फूड इंडिया 2023 में आयुष मंत्रालय |

27 नवंबर, 2023 | आयुष मंत्रालय ने 42वें भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला 2023 में प्रदर्शन में उत्कृष्टता के लिए स्वर्ण पदक जीता |

- आरोग्य मेला

आरोग्य मेला, उज्जैन, मध्य प्रदेश में भागीदारी

- वैश्विक आयुष निवेश एवं नवाचार शिखर सम्मेलन (जीएआईआईएस) में माननीय प्रधानमंत्री द्वारा प्रोफेसर आयुष्मान कॉमिक पुस्तिका का विमोचन

आज जब हम एक नए युग की दहलीज पर खड़े हैं, पिछले दशक में आयुष मंत्रालय की परिवर्तनकारी यात्रा पर चिंतन करना ज्ञानवर्धक और विस्मयकारी है। ये उल्लेखनीय उपलब्धियाँ दूरदर्शी नेतृत्व, नीतिगत उत्कृष्टता और वैश्विक कल्याण के लिए एक अटूट प्रतिबद्धता की परिवर्तनकारी शक्ति के एक शिलालेख के रूप में काम करती हैं। अगला चरण और भी अधिक ऊँचाइयों के प्रति वचनबद्ध है, क्योंकि भारत की मंशा पारंपरिक चिकित्सा में नेतृत्व करने की है, जो ''वसुधैव कुटुम्बकम– विश्व एक परिवार'' के मूल सिद्धांत पर आधारित है। पिछले दशक की यात्रा केवल उपलब्धियों का उत्सव नहीं है, बल्कि एक ऐसे भविष्य की घोषणा है, जहाँ आयुष एक स्वस्थ, सामंजस्यपूर्ण विश्व निर्माण के केंद्र में है।

संक्षिप्तियां

एबी–पीएमजेएवाई	–	आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना
एजीएनआईआई	–	एक्सिलीरेटिंग ग्रोथ ऑफ न्यू इंडिया इनोवेशन
एएचएमआईएस	–	आयुष हॉस्पिटल मैनेजमेंट इनफॉरमेशन सिस्टम
एआई	–	आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस
आयुष – एसीआईएचआर	–	आयुष – आईसीएमआर एडवांस्ड सेंटर फॉर इंटीग्रेटिड हेल्थ
एआईआईए	–	अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान
एम्स	–	अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान
एएमएआर	–	आयुष मैनुस्क्रिप्ट एडवांस्ड रिपोजिट्री
एएमआरए	–	आयुर्वेदिक मैनेजमेंट ऑफ र्‌ह्यूमेटाइड अर्थराइटिस
एओजीयूएसवाई	–	आयुष औषधि गुणवत्ता एवं उत्थान संवर्धन योजना
एआरआईवीयू	–	मूल्य–श्रृंखला उन्नयन के लिए शैक्षणिक–उद्योग अनुसंधान इनक्यूबेशन
एएसयू और एच	–	आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी और होम्योपैथी
एटीएबी	–	आयुर्वेद प्रशिक्षण प्रत्यायन बोर्ड
आयुकेयर	–	आयुर्वेद केस रिपोर्ट के जर्नल
आयुष	–	आयुर्वेद, योग व प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध, सोवा रिग्पा और होम्योपैथी
आयुषएक्सिल	–	आयुष निर्यात संवर्धन परिषद
बिम्सटेक	–	बे ऑफ बंगाल इनिशिएटिव फॉर मल्टी–सेक्टोरल टेक्नीकल एंड इकोनोमिक कॉपरेशन

बीआईएस	–	भारतीय मानक ब्यूरो
ब्रिक्स	–	ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका, मिस्र, इथोपिया, ईरान, संयुक्त अरब अमीरात
सीएआरआई	–	केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान
सीसीआरएएस	–	केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद
सीसीआरएच	–	केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद
सीसीआरएस	–	केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद
सीसीआरयूएम	–	केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद
सीसीआरवाईएन	–	केंद्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद
सीजीएचएस	–	केंद्र सरकार स्वास्थ्य योजना
सीएचसी	–	सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र
सीआईबी	–	केंद्रीय संस्थान निकाय
सीओई	–	सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (उत्कृष्टता केंद्र)
सीएसआईआर	–	वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद
सीटीआरआई	–	केंद्रीय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान
डीबीटी	–	जैव प्रौद्योगिकी विभाग
डीओसी	–	वाणिज्य विभाग
डीजीएचएस	–	स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय
डीपीआईआईटी	–	उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग
डीएसआईआर	–	वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग
डीएसटी	–	विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग
ई–चरक	–	जड़ी–बूटियों, सुगंधित, कच्चे माल और ज्ञान के लिए ई–पोर्टल
ईसीएचएस	–	भूतपूर्व सैनिक अंशदायी स्वास्थ्य योजना

ईएमआरएस	–	एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय
एफआईटीएम	–	फोरम फॉर इंडियन ट्रेडिशनल मेडिसिन
एफएमसीजी	–	फास्ट–मूविंग कंज्यूमर गुड्स
वित्तीय वर्ष	–	वित्तीय वर्ष
जीएआईआईएस	–	वैश्विक आयुष निवेश और नवाचार शिखर सम्मेलन
जीटीएमसी	–	वैश्विक पारंपरिक चिकित्सा केंद्र
जीएमपी	–	उत्तम विनिर्माण प्रथाएं
जी 20	–	ग्रुप ऑफ ट्वेंटी
मानव संसाधन	–	मानव संसाधन
एचडब्ल्यूसी	–	स्वास्थ्य और कल्याण केंद्र
आईबीआईजी	–	इंस्टीट्यूट ऑफ जीनोमिक्स एंड इंटीग्रेटिव बायोलॉजी
आईसीएआईएनई	–	आयुर्वेद नवाचार और उद्यमिता के लिए इनक्यूबेशन केंद्र
आईसीडी	–	रोग का अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण
आईसीएमआर	–	भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद
आईडीवाई	–	अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस
आईईसी	–	सूचना शिक्षा और संचार
आईआईटी	–	भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान
आईजेएआर	–	आयुर्वेद अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल
आईएलबीएस	–	यकृत और पित्त विज्ञान संस्थान
आईएमपीसीएल	–	इंडियन मेडिसिन फार्मास्युटिकल कॉर्पोरेशन लिमिटेड
आईएनआई	–	राष्ट्रीय महत्व के संस्थान
आईपीसी	–	भारतीय भेषज संहिता आयोग

आईपीडी	–	अंतर्वर्ती रोगी विभाग
आईपीआर	–	बौद्धिक संपदा अधिकार
आईआरडीएआई	–	भारतीय बीमा नियामक और विकास प्राधिकरण
आईएसओ	–	अंतर्राष्ट्रीय मानक संगठन
आईटी	–	सूचना प्रौद्योगिकी
आईटीआरए	–	आयुर्वेद प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान
जेडीआरएएस	–	जर्नल ऑफ ड्रग रिसर्च इन आयुर्वेदिक साइंसेज
जेआरएएस	–	जर्नल ऑफ रिसर्च इन आयुर्वेदिक साइंसेज
एलबीएसएनएए	–	लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी
एलएसएचटीएम	–	लंदन स्कूल ऑफ हाइजीन एंड ट्रॉपिकल मेडिसिन
एमडीएनआईवाई	–	मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान
एमएचए	–	गृह मंत्रालय
एमएमडीपी	–	रुग्णता प्रबंधन और विकलांगता निवारण
एमएसएमई	–	सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम
एमओए	–	आयुष मंत्रालय
एमओडी	–	रक्षा मंत्रालय
एमओएच एंड एफडब्ल्यू	–	स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय
एमओईएफ	–	पर्यावरण और वन मंत्रालय
एमओईएफसीसीआई	–	भारत का पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय
एमओयू	–	समझौता ज्ञापन
एनएएसी	–	राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद
एनएबीएच	–	अस्पतालों और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के लिए राष्ट्रीय प्रत्यायन बोर्ड

एनएएम	–	राष्ट्रीय आयुष मिशन
नमस्ते	–	राष्ट्रीय आयुष रुग्णता और मानकीकृत शब्दावली इलेक्ट्रॉनिक पोर्टल
एनएआरआईपी	–	राष्ट्रीय आयुर्वेद पंचकर्म अनुसंधान संस्थान
एनसीएच	–	राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग
एनसीआई	–	राष्ट्रीय कैंसर संस्थान
एनसीआईएसएम	–	भारतीय चिकित्सा प्रणाली के लिए राष्ट्रीय आयोग
एनईआईएएफएमआर	–	पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं लोक चिकित्सा अनुसंधान संस्थान
एनईआईएएच	–	पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं होम्योपैथी संस्थान
एनईपी	–	राष्ट्रीय शिक्षा नीति
एनआई	–	राष्ट्रीय संस्थान
एनआईए	–	राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान
एनआईएच	–	राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान
एनआईएमएचएएनएस	–	राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान संस्थान
एनआईएन	–	राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान
एनआईआरटीएच	–	राष्ट्रीय जनजातीय स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान
एनआईएस	–	राष्ट्रीय सिद्ध संस्थान
एनआईएसआर	–	राष्ट्रीय सोवा रिग्पा संस्थान
नीति आयोग	–	नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर ट्रांसफोर्मेशन ऑफ इंडिया आयोग
एनआईयूएम	–	राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान
एनएमपीबी	–	राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड
एनपीसीडीसीएस	–	कैंसर, मधुमेह, हृदय रोग व स्ट्रोक की रोकथाम और नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम
एनआरएचएम	–	राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन

एनएसएस	–	राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण
ओपीडी	–	आउट पेशेंट विभाग
पीसीए	–	परियोजना सहयोग समझौता
पीसीआईएम एंड एच	–	भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी भेषज संहिता आयोग
पीडीएफ	–	पोस्ट डॉक्टरल फैलोशिप
पीजी	–	स्नातकोत्तर
पीएचआई	–	सार्वजनिक स्वास्थ्य पहल
पीएच.डी.	–	डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी
पीएसयू	–	सार्वजनिक क्षेत्र की इकाई
क्यूओएल	–	जीवन की गुणवत्ता
आरएआरआई	–	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान
आरएवी	–	राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ
आर एंड डी	–	अनुसंधान और विकास
आरआईएस	–	विकासशील देशों की अनुसंधान एवं सूचना प्रणाली
आरएमआईएस	–	अनुसंधान प्रबंधन सूचना प्रणाली
आरएमएल	–	डॉ राम मनोहर लोहिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज
एसएएचआई पोर्टल	–	आयुर्वेदिक ऐतिहासिक छापों के प्रदर्शन से संबंधित पोर्टल
एससीओ	–	शंघाई सहयोग संगठन
स्पार्क	–	आयुर्वेद अनुसंधान के लिए केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद का छात्रवृत्ति कार्यक्रम
स्टार	–	आयुर्वेद अनुसंधान में प्रशिक्षण के लिए योजना
टीएम	–	पारंपरिक चिकित्सा
त्रिसूत्र	–	आयुर्जीनोमिक्स के माध्यम से ट्रांसलेशनल रिसर्च एंड इनोवेटिव साइंस

यूजी	–	स्नातक
यूएसडी	–	अमेरिकी डॉलर
यूटी	–	संघ राज्य क्षेत्र
डब्ल्यूएचओ	–	विश्व स्वास्थ्य संगठन
वाईसीबी	–	योग प्रमाणन बोर्ड

आयुष मंत्रालय

द्वारा तैयार

श्री सत्यजीत पॉल, उप महानिदेशक, अध्यक्ष

डॉ. गालिब, एसोसिएट प्रोफेसर, एआईआईए

श्री संजय देव, मीडिया सलाहकार

डॉ. सुमीत गोयल, विशेष कर्तव्य अधिकारी (तकनीकी)

डॉ. रविंदर चोपड़ा, (सहायक सलाहकार, आयुर्वेद)

डॉ. तृप्ता दीक्षित, वरिष्ठ सहायक निदेशक, आयुषएक्सिल

डॉ. रोशनी राजन, परियोजना प्रबंधक

डॉ. श्रेया गायकवाड, युवा पेशेवर

डॉ. स्मिता पाटील, युवा पेशेवर

आयुष मंत्रालय
आयुष भवन
जीपीओ कॉम्प्लेक्स, आईएनए नई दिल्ली